A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 8 दिसंबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-99 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

सतपुड़ा के घने जंगलों की खूबसूरत दुनिया

सतपुड़ा के हरे-भरे घने जंगल में जाना अपने आप में एक अद्भुत अनुभूति है। जब से मेरा और मेरे दोस्त रूपी बेटर हॉफ करनल का 'मढ़ई' (होशंगाबाद अब नर्मदापुरम जिले के सोहागपुर कस्बे के करीब) जाना शुरू हुआ, तब से कोई मौका मिला नहीं कि हम चले 'मढ़ई'। हम 'मढ़ई' जाने के किसी भी अवसर को कभी नहीं गंवाते। मढ़ई... यानी एक खूबसूरत मुकाम। इस दुनिया में वह एक छोटी सी खूबसूरत दुनिया है, जहां विशुद्ध नीरवता है,पानी है, नदियां हैं,अद्भुत पक्षियों की भरमार हैं। मूक प्राणियों की अनूठी दुनिया है जो बिना कुछ कहे बहुत कुछ कहती है। घने-ऊंचे वृक्ष हैं जो अपनी विशालता से कहीं धूप को रोक देते हैं, कभी उनसे उपजी सरसराहट एक दुर्लभ संगीत पैदा करती है। बहुत अच्छा लगता है यह साक्षात्कार। बार-बार जाएं तो भी हर यात्रा एक नया अनुभव कराती है। मढ़ई की हर यात्रा से पहले यह लगता था कि इस बार कुछ नया अनुभव मिले...और इस बात बात बन गई। हमें जंगल में बाघ से दो-चार होने का (अपनी सुरक्षा के मापदंडों का पूरा ध्यान रखते हुए) मौका मिल गया! जिस घड़ी का बहुत लंबे समय से इंतजार था सौभाग्य से वह घड़ी आ गई। जब हम दोनों 'बोट सफारी' के लिए निकले तब हमने एक बहुत ही अद्भुत दृश्य देखा जो किसी किसी को मुश्किल से नसीब होता है। इतने वर्षों से लगातार जंगलों से स्वाभाविक मित्रता हो जाती है। बहुत कुछ बातों का आभास और पूर्वानुमान होने लग जाता है। जंगल में उत्पन्न सन्नाटे से टाइगर की चहल-पहल समझ में आ रही थी और अचानक देखा कि टाइगर पानी में उतरा और उसने तैरना आरंभ किया। निगाह पहले एक टाइगर की तरफ गई। उसका फोटो खींचने ही वाले थे कि देखा एक और टाइगर पानी में उतरा। दोनों बेधड़क नदी के दूसरे किनारे की ओर जा रहे थे। देनवा नदी का बैक वाटर, जिसमें अपार जल राशि मौजूद है, विशाल नदी के रूप में जंगल के प्राणियों की जीवन धारा का काम करती है। सतपुड़ा जंगल की प्राकृतिक हरियाली और पशु पक्षियों की कई स्मृतियां हमारे कैमरे में और ज़ेहन में सुरक्षित हैं।

हम दोनों के लिए इस बार नया लाइफ टाइम अनुभव है कि हम प्रत्यक्ष रूप से बाघों की इस मौजूदगी के गवाह बने और धन्यवाद है उन टाइगर्स का कि उन्होंने हमें उनके फोटो और वीडियो बनाने का अविस्मरणीय मौका दिया।

फोटो और विवरण: गौरा जोशी नैनवानी

सुप्रभात

एक दिन दुख बहुत उदास था
वह चाहता था कि उसकी उदासी
सारे बृह्मांड में फैल जाए
अवसाद से भर जायें नक्षत्र
ग्रहों की चमक कम हो जाए
स्याह हो जाए आकाश
बादल मौन हो जाएं।

वह चाहता था
कोयलें गूंगी हो जाएं
कौवों की चीख बस सुनाई दे
पेड़ झूमना बन्द कर दें
सूख जाएँ तमाम जंगल
सागर में डूब जाए यह दुनिया।

कितना अच्छा हो उसने सोचा
सूरज उगे ही नहीं
चाँद हमेशा के लिये डूब जाए
सितारे टूट कर गिर पड़ें
हवाओं का दम टूट जाए

और भी बहुत कुछ चाहता था वह
अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए

इससे पहले कि उसकी चाहत
पूरी हो पाती
एक बच्चे ने आसमान में
उड़ाई पतंग
एक बच्चा धागा लपेटने लगा ।

- शरद कोकास

पूजा स्थल एक्ट की वैधता को 'परखेगा' सुप्रीम कोर्ट

- चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सीजेआई ने गठित की स्पेशल बेंच
- 12 को सुनवाई,हिंदू पक्ष बोला-कानून हिंदू-सिख, बौद्ध-जैन के खिलाफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट 12 दिसंबर को एक महत्वपूर्ण मामले की सुनवाई करेगा। यह मामला पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम, 1991 से जुड़ा है। इस अधिनियम की कुछ धाराओं की संवैधानिकता को चुनौती दी गई है। इस मामले की सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने एक विशेष पीठ का गठन किया है। इस पीठ में भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस केवी विश्वनाथन शामिल हैं। मामले में सुनवाई 12 दिसंबर को दोपहर 3.30 बजे शुरू होगी। ये पीठ पूजा स्थल अधिनियम, 1991 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली रिट याचिकाओं पर सुनवाई करेगा। यह एक्ट 15 अगस्त, 1947 को जैसी स्थिति थी, उसमें किसी भी पूजा स्थल के धार्मिक स्वरूप को बदलने पर रोक लगाता है। इसका मतलब है कि उस तारीख के बाद किसी भी पूजा स्थल के स्वामित्व या प्रबंधन को लेकर कोई मुकदमा नहीं दायर किया जा सकता। न्यायाधीश संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस केवी विश्वनाथन की विशेष पीठ इस मामले को सुनेगी।

महाराष्ट्र विधानसभा में एमवीए विधायकों का शपथ से वॉकआउट

आदित्य ठाकरे बोले-हमें ईवीएम पर शक, अजित बोले-चुनाव आयोग जाएं

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा का 3 दिन चलने वाला स्पेशल सेशन शनिवार को शुरू हुआ। प्रोटेम स्पीकर ने सबसे पहले सीएम देवेंद्र फडणवीस, दोनों डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने विधायक पद की शपथ दिलाई। आज सभी 288 विधायकों को शपथ लेनी थी। विपक्ष के सिर्फ दो विधायक ही शपथ ले पाए थे, तभी विपक्ष ने सेशन का वॉकआउट किया। शिवसेना के नेता आदित्य ठाकरे ने कहा- हमने फैसला किया है कि हमारे विधायक आज शपथ नहीं लेंगे। अगर ये जनता का जनादेश होता तो लोग खुश होते और जश्न मनाते, लेकिन इस जीत का कहीं भी लोगों ने जश्न नहीं मनाया। हमें ईवीएम पर शक है। विपक्ष के वॉकआउट पर डिप्टी सीएम अजित पवार ने कहा, चुनाव हुआ है और लोगों ने हमें जिताया है। अभी वॉकआउट करने से कुछ नहीं होने वाला है। अगर उनको कुछ करना है तो चुनाव आयोग के पास जाना चाहिए। 9 दिसंबर को विधानसभा अध्यक्ष चुना जाएगा।

औद्योगिक विकास के प्रयासों में नर्मदापुरम को मिली अपार सफलता : मुख्यमंत्री

समूचे नर्मदापुरम के विकास का केंद्र बनेगा औद्योगिक क्षेत्र मोहासा

भोपाल/नर्मदापुरम (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि औद्योगिक क्षेत्र मोहासा समूचे नर्मदापुरम के विकास का केंद्र बनेगा। सतपुड़ा का यह क्षेत्र आज नया इतिहास लिखने जा रहा है। औद्योगिक विकास के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किए गए प्रयासों में नर्मदापुरम को अपार सफलता प्राप्त हुई है। जिसमें न केवल त्वरित गति से मोहासा बाबई सौर ऊर्जा पार्क की भूमि को 227 से 884 एकड़ बढ़ाई गई बल्कि 20 औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए भूमि आवंटन पत्र का भी वितरण किया गया है। मोहासा में कुल 18 हजार करोड़ के निवेश से 24 हजार स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। सीएम ने नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र की 20 औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधियों को भूमि आवंटन पत्र का वितरण भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ यादव शनिवार को औद्योगिक क्षेत्र मोहासा में आयोजित विद्युत एवं नवीकरणीय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण क्षेत्र में इकाइयों के भूमिपूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र की 20 औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधियों को भूमि आवंटन पत्र का वितरण भी किया।

इस अवसर पर लोक निर्माण विभाग एवं नर्मदापुरम जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, विधायक डॉ सीतासरन शर्मा, विधायक सोहागपुर श्री विजयपाल सिंह, विधायक सिवनीमालवा श्री प्रेम शंकर वर्मा तथा प्रमुख सचिव मध्यप्रदेश औद्योगिक निवेश एवं प्रोत्साहन विभाग श्री राघवेन्द्र सिंह, कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना, एसपी डॉक्टर गुरकरन सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, विभिन्न औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में जनसमूह उपस्थित रहा।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र मोहासा नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में स्थापित होने जा रही प्रत्येक औधोगिक इकाइयों द्वारा लगभग 2 हजार करोड़ से अधिक का निवेश किया जा रहा है। जिससे सोहागपुर, इटारसी, सिवनीमालवा, पिपरिया, पचमढ़ी के स्थानीय युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा। रोजगार के लिए होने वाला पलायन रुकेगा। महज 2 से 3 सालों में ही संपूर्ण नर्मदापुरम का आर्थिक परिदृश्य बदलेगा। ईमानदार और कर्मशील नर्मदापुरम की जनता औद्योगिक विकास में सहायक बनेगी।

पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश... भारतीय कूटनीति का सबसे बड़ा इम्तिहान तो अब है

- बांग्लादेश में हिंदू और अन्य अल्पसंख्यकों पर बढ़े हमलों से बढ़ी चिंता
- चीन के साथ नेपाल की बढ़ती करीबी पर भारत की है लगातार नजर
- रूस और पाकिस्तान के बढ़ते संबंधों से भारतीय हित ना हों प्रभावित

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन के साथ भारत का सीमा विवाद सुलझ चुका है। भारत विरोध को लेकर मालदीव के सुर भी नरम पड़ चुके हैं। अब भारत के सामने बांग्लादेश में सत्ता पलट के बाद हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यक पर हमले के साथ ही द्विपक्षीय संबंधों में असहज होती स्थिति को बेहतर करने की चुनौती है। शेख हसीना के देश छोड़ने के बाद से बांग्लादेश में कट्टरपंथ समर्थित सरकार चुकी है। ऐसे में विदेश मंत्रालय की तरफ से विदेश सचिव विक्रम मिसरी 9 दिसंबर को बांग्लादेश जा रहे हैं। मौजूदा समय में भारत को तीन तरफ से चुनौती मिल रही है। बांग्लादेश के साथ ही पाकिस्तान और नेपाल में स्थिति को कूटनीति के लिहाज से बेहतर नहीं माना जा रहा है। ऐसे में विदेश मंत्रालय के साथ ही यह भारतीय कूटनीति के सबसे बड़े

इम्तिहान का भी समय है। नेपाल की चीन के साथ बढ़ती नजदीकी से भारत को सजग रहने की जरूरत है। इसमें नेपाल को इस तरह साधना होगा कि वह अपनी जमीन से भारत विरोधी गतिविधियों को ना होने दे। इसके अलावा पाकिस्तान और रूस के बीच बढ़ती नजदीकी पर भी विदेश मंत्रालय बारिकी से नजर रख रहा है। भारतीय कूटनीति को यह सुनिश्चित करना होगा कि रूस और चीन के बीच बढ़ती दोस्ती भारत के लिए खतरा पैदा ना कर दे। पाकिस्तान

की नीति और नीयत किसी से छुपी नहीं है। वह, हर हाल में भारत को नीचा दिखाने और उससे कमजोर करने का कोई मौका नहीं छोड़ता है। ऐसे में भारतीय कूटनीति का यह तीन तरफ से इम्तिहान का समय है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने पाकिस्तानियों और पाकिस्तानी मूल के लोगों के लिए वीजा नियमों में ढील दे दी है। इसके बाद अब पाकिस्तानी नागरिकों को बांग्लादेश देश की यात्रा के लिए सुरक्षा मंजूरी लेना जरूरी नहीं होगा। एक्सपर्ट्स का

कहना है कि इससे भारत के पूर्वी और पूर्वोत्तर इलाकों में सुरक्षा संबंधी चुनौती पैदा हो सकती है। 1971 के अत्याचारों और 1975 में शेख मुजीबुर रहमान की हत्या में आईएसआई की भूमिका के कारण अवामी लीग सरकारों के पाकिस्तान के साथ ऐतिहासिक रूप से अच्छे संबंध नहीं रहे हैं। 2019 में, शेख हसीना सरकार ने एक आदेश जारी किया कि पाकिस्तानी नागरिकों को बांग्लादेश में प्रवेश करने के लिए वीजा प्राप्त करने से पहले 'अनापत्ति' मंजूरी लेनी होगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 8 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

संभल हिंसा मामले में पुलिस की कर दी तारीफ

पति ने पहले बताया काफिर, फिर दे दिया तीन तलाक

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल से अजीबो-गरीब मामला सामने आया है। यहां पर महिला का पुलिस की तारीफ करना महंगा पड़ गया। महिला ने संभल हिंसा मामले में पुलिस की कार्रवाई को उचित ठहराया था।

महिला ने संभल मामले में पुलिस के एक्शन की तारीफ कर दी। इस पर पति नाराज हो गया। उसने को काफिर करार देते हुए तीन तलाक दे दिया। पीड़िता ने इस मामले में पुलिस के समक्ष गुहार लगाई है। एसएसपी से मुलाकात कर उसने पूरे मामले की जानकारी दी। पीड़िता ने तीन तलाक दिए जाने के मामले में पति और ससुरालवालों पर गंभीर आरोप भी लगाए हैं। एसएसपी ने महिला थाना की एसएचओ को मामले की जांच के आदेश दिए हैं।

केंद्र सरकार ने तमिलनाडु को 944 करोड़ की मदद भेजी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने शुक्रवार को तमिलनाडु सरकार को राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष में से 944 करोड़ रुपए की सहायता की मंजूरी दी। तमिलनाडु में 30

नवंबर को आए तूफान फेंगल ने राज्य को बहुत प्रभावित किया। केंद्र सरकार ने इंटर मिनिस्ट्रियल सेंट्रल टीम को भी तमिलनाडु और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में फेंगल से हुई तबाही का जायजा लेने के लिए भेजा था। गृह मंत्रालय ने कहा- आईएमसीटी की रिपोर्ट्स मिलने के बाद आपदा प्रभावित राज्यों को राष्ट्रीय आपदा राहत कोष में से अतिरिक्त वित्तीय सहायता राशि दी जाएगी।

अजित पवार की 1,000 करोड़ की जब्त संपत्ति होगी रिलीज

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम पद की छठी बार शपथ लेने के 2 दिन बाद अजित पवार की जब्त बेनामी संपत्ति रिलीज करने का आदेश आ गया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दिल्ली के आयकर विभाग ट्रिब्यूनल ने पवार की 1 हजार करोड़ से ज्यादा की संपत्ति को फ्री कर दिया है। 7 अक्टूबर 2021 में छापेमारी के दौरान आईटी डिपार्टमेंट ने इन संपत्तियों को जब्त किया था। इसमें अजित की पत्नी सुनेत्रा पवार और बेटे पार्थ पवार की भी संपत्तियां हैं। ट्रिब्यूनल ने संपत्तियां मुक्त करने का आदेश सुनाते हुए कहा- संपत्तियों को लेकर कोई गैरकानूनी हेरफेर होने का सबूत आईटी डिपार्टमेंट पेश नहीं कर पाया है। बेनामी लेन-देन की बात भी स्पष्ट नहीं हो पाई है।

बड़ा अनुमान

हम सबसे अच्छा-प्रदर्शन वाले बाजारों में होंगे शुमार

- सेंसेक्स 1 साल में 28 फीसदी चढ़कर 1 लाख पार कर सकता है

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई (एजेंसी)। अमेरिकी ब्रोकरेज फर्म मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि भारत की अर्थव्यवस्था में स्थिरता बनी रहेगी। जोरदार घरेलू निवेश के चलते 2025 में भारत सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले उभरते बाजारों में से एक हो सकता है। बाजार का मौजूदा रुझान बने रहने पर एक साल में सेंसेक्स 1,05,000 तक का स्तर छू सकता है। यह मौजूदा स्तर से 28.5त्न तेजी दर्शाता है। सेंसेक्स यह लेवल उस स्थिति में हासिल करेगा, जब कच्चे तेल के दाम लगातार 70 डॉलर प्रति बैरल से नीचे रहें।

इसके चलते महंगाई में कमी आएगी और आरबीआई ब्याज दरों में उम्मीद से ज्यादा कटौती करेगा। ब्रोकरेज फर्म ने कहा कि अगले एक साल में सामान्य रुझान की स्थिति (बेस केस) में भी सेंसेक्स 93,000 का लेवल छू सकता है। यह 13.8 फीसदी तेजी दर्शाता है। यह अनुमान यह मानकर लगाया गया है कि सरकारी घाटा कम

होने से इकोनॉमी में स्थिरता बनी रहेगी, निजी निवेश बढ़ेगा और रियल ग्रोथ व रियल रेट्स के बीच अंतर बढ़ेगा। मॉर्गन स्टेनली का मानना है कि बाजार में यदि मंदी (बेयर केस) आती है तो सेंसेक्स एक साल में मौजूदा स्तर से 14.3 फीसदी गिरकर 70 हजार तक के लेवल पर आ सकता है। ऐसा तब होगा, जब कच्चे तेल की कीमतें बढ़कर 110 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच जाएं।

रिन्युएबल एनर्जी में उछाल के कारण भारत ग्रीन इन्वेस्टमेंट में चीन से आगे निकल गया है। तीसरी तिमाही में करीब 20 हजार करोड़ रुपए की डील पूरी हुई। यह चीन से चार गुना और सिर्फ अमेरिका से कम है। 5 दिन से जारी तेजी का रुख थमा, सेंसेक्स फ्लैट बंद रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति के बाद शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजार में 5 दिन से जारी तेजी थम गई।

दरभंगा में राम विवाह की झांकी पर चले ईंट-पत्थर

मस्जिद के पास पथराव, लोग बोले-बच्चों को गोद में लेकर भागे, हमले की पहले से थी तैयारी

दरभंगा (एजेंसी)। बिहार के दरभंगा में शुक्रवार को राम विवाह की झांकी पर बाजीतपुर की एक मस्जिद के पास पथराव किया गया। इसके बाद जमकर बवाल हुआ। विवाह पंचमी के मौके पर तरौनी गांव से झांकी निकाली जा रही थी। तभी वहां दोनों पक्षों में विवाद हो गया। उन्होंने एक दूसरे पर ईंट-पत्थर फेंके। झांकी को तरौनी से बाजितपुर में स्थित मस्जिद तक जाना था। फिर बाजितपुर से इसकी वापसी होनी थी। जैसे ही झांकी मस्जिद के पास पहुंची उसे रोका गया और पथराव किया गया।

बताया जा रहा है कि एक समुदाय के लोगों ने पहले तो झांकी को रोका, फिर लाठी-डंडों से मारपीट की और फिर पथराव किया। इसके बाद दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए और दोनों तरफ से पत्थरबाजी होने लगी।

बांग्लादेश में एक और हिंदू मंदिर पर हमला

पेट्रोल डालकर मूर्तियों को लगाई आग, कट्टरपंथियों के आगे फेल हुए मोहम्मद यूनुस

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में हिंदुओं सहित अल्पसंख्यकों के खिलाफ लगातार घटनाएं बढ़ रही हैं। शुक्रवार को इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस के एक और मंदिर में अराजक तत्वों की ओर से तोड़ा गया और आग लगा दी गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक हमला इस्कॉन नमहट्टा मंदिर पर किया गया था। इस घटना में अभी तक किसी के घायल होने की जानकारी नहीं है। यह घटना देश में हिंदू अल्पसंख्यकों को निशाना बनाकर किया गया एक और हमला है। घटना की पुष्टि कोलकाता इस्कॉन के उपाध्यक्ष राधारमण दास ने अपने एक्स अकाउंट पर इसकी फोटो शेयर कर की। उनके मुताबिक मंदिर में रखे देवी-देवताओं की मूर्तियां और अन्य सामान पूरी तरह जल गए। यह मंदिर ढाका के तुराग थाना क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ को जान से मारने की धमकी

रांची (एजेंसी)। रांची के सांसद और केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ को धमकी मिली है। अपराधियों ने उनके फोन पर मैसेज कर 50 लाख रुपए देने की मांग की है। भेजे गए मैसेज में अपराधियों ने तीन दिन के भीतर पैसे देने को कहा है, नहीं तो परिणाम भुगतने को तैयार रहने की बात कही है। संजय सेठ संसद के शीतकालीन सत्र में हिस्सा लेने के लिए दिल्ली में थे, उसी दौरान उन्हें धमकी भरा मैसेज मिला है। धमकी भरा मैसेज मिलने के बाद संजय सेठ ने इसकी जानकारी दिल्ली पुलिस को दी। जानकारी मिलते ही पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। आनन-फानन में दिल्ली पुलिस कमिश्नर आवास पर पहुंचे।

इंडिया ब्लॉक मैंने बनाया, मौका मिला तो मैं ही उसे लीड करूंगी

- समाजवादी पार्टी और शिवसेना-यूबीटी ने किया समर्थन
- भाजपा ने कहा- विपक्ष को राहुल गांधी पर भरोसा नहीं

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हरियाणा-महाराष्ट्र और उपचुनावों में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन को लेकर नाराजगी जताई है। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा, मैंने इंडिया गठबंधन बनाया। इसका नेतृत्व करने वाले इसे ठीक से नहीं चला सकते, तो मुझे मौका दें। मैं बंगाल से ही गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए तैयार हूं। ममता बनर्जी के बयान का शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत और समाजवादी पार्टी ने समर्थन किया है। राउत ने शनिवार को कहा, हम भी चाहते हैं कि वे गठबंधन की प्रमुख भागीदार बनें। चाहे वह ममता बनर्जी हों, अरविंद केजरीवाल हों या शिवसेना, हम सभी एक साथ हैं।

महिला उद्यमिता पर सेमीनार आयोजित

भोपाल। शासकीय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद कैरियर गाइडेंस प्रकोष्ठ के तत्वाधान में शनिवार को महाविद्यालय में महिला उद्यमिता शासकीय योजनाएं एवं नीतियां विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता भोपाल नूतन कॉलेज में पदस्थ समाजशास्त्र की प्राध्यापिका डॉ माधवी लता दुबे रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ शालिनी सक्सेना ने की। कार्यक्रम प्रभारी डॉ आशा वर्मा एवं डॉ सुषमा जैन थी मुख्य अतिथि के स्वागत कार्यक्रम के पश्चात प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ आशा वर्मा ने विषय विवरण के साथ स्टार्टअप 2024 के महत्वपूर्ण बिंदु बताते हुए विद्यार्थियों को फाइनेंशियल सपोर्ट एवं सीड मनी फंड स्कीम के बारे में बताया। प्राचार्य ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को सफल उद्यमियों की प्रेरक कहानियां से उत्प्रेरित किया एवं शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता माधवी लता दुबे ने विद्यार्थियों को महिला उद्यमिता स्टार्टअप की योजनाएं एवं क्रियान्वयन लघु सूक्ष्म एवं मध्यम उद्योगों की जानकारी देकर महिला सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया।

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज ने विदिशा में जिला विकास समन्वय एवं मूल्यांकन समिति की बैठक ली

डबल इंजन सरकार विदिशा के विकास को देगी रफ्तार

भोपाल। केन्द्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शनिवार को विदिशा कलेक्ट्रेट सभागार में जिला विकास समन्वय एवं मूल्यांकन समिति की समीक्षा बैठक में सहभागिता की। बैठक में सभी जनप्रतिनिधि और संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। केन्द्रीय मंत्री ने बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, दीन दयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ कार्ड, स्वामित्व योजना, पीएम किसान सम्मान निधि, जल जीवन मिशन और आयुष्मान भारत योजना सहित जिले में क्रियान्वित सभी योजनाओं और गतिविधियों के संबंध में अधिकारियों से चर्चा की। इस दौरान केन्द्रीय मंत्री ने अधिकारियों को योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में जरूरी निर्देश भी दिए।

कृषि चौपाल कार्यक्रम का शुभारंभ- केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शनिवार को विदिशा के कलेक्ट्रेड सभाकक्ष में जनप्रतिनिधियों और जिले के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कृषि चौपाल कार्यक्रम का पहला एपिसोड देखा। दरअसल कृषि विभाग और केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने तय किया था कि, किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए मोदी के मन बात की तर्ज पर किसानों के लिए कार्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा। कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार होने के बाद शनिवार को डीडी किसान चैनल पर कृषि चौपाल कार्यक्रम के पहले एपिसोड का प्रसारण किया गया। कार्यक्रम के पहले एपिसोड को शिवराज सिंह चौहान ने विदिशा से देखा। इस दौरान शिवराज सिंह ने कहा कि, कृषि चौपाल का आज से शुभारंभ हुआ है, जिसमें किसान

और वैज्ञानिकों ने बैठकर चर्चा की, किसानों ने सवाल पूछे और वैज्ञानिकों ने उनके जवाब दिए। कृषि चौपाल का उद्देश्य ये है कि, विज्ञान और किसान का, लैब और लैंड का, जमीन और प्रयोगशाला का संबंध जुड़ सके। कार्यक्रम 7 दिसंबर से प्रारंभ हुआ है, और हर माह के पहले शनिवार को कृषि चौपाल कार्यक्रम का प्रसारण किया जाएगा।

लखपति दीदी अभियान से बहनों की जिंदगी बदली- केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, लखपति दीदी अभियान में विदिशा जिले ने काफी प्रगति की है। बहनें अनेक तरह की रोजगार मूलक योजनाओं से जुड़कर अपनी आमदनी साल में एक लाख रूपए से ज्यादा कर रही हैं। उनमें और कौन-कौनसी योजनाएं जोड़ी जा सकती है उस पर विचार किया गया है। वहीं उन्होंने कहा कि, महिला सशक्तिकरण, कृषि के क्षेत्र में सशक्तिकरण, फिर अलग-अलग योजनाओं का लाभ चाहे वो मनरेगा के अन्तर्गत होने वाले विभिन्न काम हों, हमनें तय किया की उसमें भी अब प्राथमिकता तय करेंगे कि जिले के लिए कौन-कौनसे काम जरूरी हैं। मनरेगा की राशि का बेहतर उपयोग करें, क्योंकि केंद्र से भारी धनराशि मनरेगा के रूप में जिले में आती है। इसके साथ-साथ जल जीवन मिशन के माध्यम से हर घर में नल से जल कैसे पहुंचें। पीएम जन-मन योजना में बची हुई सड़कों का निर्माण और जो चल रहे हैं उनकी भी समीक्षा की गई है। मोदी जी का संकल्प है कि, ग्रामीण क्षेत्र में अभी 2 करोड़ पक्के मकान और बनाए जाएंगे, कोई भी गरीब कच्ची छत के नीचे नहीं रहेगा। इसलिए एक नया सर्वे प्रारंभ होने वाला है जो आवास प्लस के सर्वे में नाम रह गए हैं उन नामों को पीएम आवास की सूची में जोड़ा जाएगा।

विदिशा, कृषि के क्षेत्र में बनेगा आइडियल- केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, विदिशा कृषि के क्षेत्र में आइडियल बने और कृषि के साथ-साथ जो कृषि से जुड़ी गतिविधियां हैं, चाहे वो पशुपालन हो, कृषि का विविधीकरण हो, फलों की खेती, फूलों की खेती, सब्जियों की खेती, औषधि की खेती, कृषि वानिकी सहित जितने पक्ष हो सकते हैं, सभी पर विचार कर योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन और आगे हम कौन कौनसी योजनाएं बना सकते हैं इस पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि, पहले कलेक्टर की लीडरशिप में जिले के अधिकारी विचार करेंगे, जनप्रतिनिधि अपनी तरफ से उसमें योगदान देंगे और कृषि से जुड़े सभी लोगों को भी जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि, बैठक में हम सभी लोगों ने मिलकर तय किया कि, विदिशा, विकास की दृष्टि से और नए आयाम छूए। समृद्ध, विकसित विदिशा के निर्माण के लिए जो योजनाएं चल रही हैं, उनका कैसे हम आदर्श क्रियान्वयन करें और डबल इंजन की सरकार दिल्ली में प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में अधिकतम योजनाओं का लाभ कैसे विदिशा को मिले। प्रदेश से हमारे मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में जो योजनाएं चल रही है, उनका लाभ कैसे विदिशा को मिले इन विषयों पर विचार किया गया।

प्रो. पवित्र श्रीवास्तव को प्रभा साक्षी हिन्दी सेवा सम्मान 2024

भोपाल। समाचार पोर्टल प्रभा साक्षी की 23 वीं वर्षगांठ के अवसर पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ पवित्र श्रीवास्तव को पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र मे हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने के अतुलनीय योगदान के लिए 'प्रभा साक्षी- हिन्दी सेवा सम्मान 2024' से सम्मानित किया गया। प्रो. श्रीवास्तव को यह सम्मान दिल्ली स्थित कांस्टिट्यूशन क्लब में संपन्न कार्यक्रम में यह सम्मान प्रदान किया गया। इस सम्मान के लिए प्रो. पवित्र श्रीवास्तव ने प्रभा साक्षी के प्रधान संपादक गौतम मोरारका एवं संपादक नीरज दुबे का आभार व्यक्त किया है। प्रो. श्रीवास्तव वर्तमान मे एमसीयू मे विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग के साथ ही सिनेमा अध्यन विभाग के एचओडी है। वे विगत 25 वर्षो से मीडिया शिक्षण- प्रशिक्षण, रिसर्च तथा अकादमिक प्रशासनिक गतिविधियों मे सक्रिय हैं।

भोपाल ईडी का सीहोर-इंदौर में कारोबारी के यहां छापा

चार ठिकानों पर सर्चिंग, महादेव सट्टा एप मामले में रायपुर ईडी की भी कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल ईडी ने 5 दिसंबर को सीहोर और इंदौर में छापामार कार्रवाई करते हुए बेनामी दस्तावेज और नकदी जब्त की है। प्रवर्तन निदेशालय ने सीहोर में मनोज परमार और उसके सहयोगियों के ठिकानों से कई बेनामी दस्तावेज जब्त किए हैं। ईडी अफसरों की टीम ने परमार के सीहोर और इंदौर स्थित चार ठिकानों पर छापा मार कर साढ़े तीन लाख रुपए भी फ्रीज किए हैं।

ईडी भोपाल जोनल कार्यालय के अनुसार यह कार्यवाही पीएमएलए 2002 के प्रावधानों के अंतर्गत की गई है। इसमें मनोज परमार और अन्य के मामले में प्रदेश के सीहोर और इंदौर जिलों में स्थित 4 परिसर पर पांच दिसम्बर को सर्चिंग अभियान चलाया गया। तलाशी के दौरान विभिन्न आपत्तिजनक दस्तावेज और अचल व चल संपत्तियां पाई गई है। इन्हें जब्त कर लिया गया है। जब्त संपत्ति में बैंक बैलेंस भी शामिल है।

रायपुर ईडी ने छग, एमपी में निवेश पर की कार्रवाई- ईडी के रायपुर जोनल कार्यालय ने भी पांच दिसम्बर को 387.99 करोड़ रुपए की चल और अचल संपत्ति को अस्थायी रूप से कुर्क करने की एक अन्य कार्रवाई की है। ईडी ने ये कार्रवाई महादेव सट्टा एप के प्रमोटर्स द्वारा छत्तीसगढ़ के साथ मुंबई और मध्यप्रदेश में भी निवेश की सूचना मिलने पर की थी। ईडी की जांच में पता चला है कि मॉरीशस स्थित कंपनी एफपीआई और एफडीआई के माध्यम से हरि शंकर टिबरेवाल से संबंधित मेसर्स टानो इन्वेस्टमेंट अपॉर्चुनिटी फंड द्वारा निवेश किया गया है। यह निवेश छत्तीसगढ़, मुंबई और मध्य प्रदेश में हुआ है। जिसमें अचल संपत्ति प्रमोटरों के नाम पर रखी गई है। ये महादेव ऑनलाइन बुक मामले में कई सट्टेबाजी ऐप, वेबसाइट, पैनल ऑपरेटर और प्रमोटरों के सहयोगी हैं। इस मामले में अब तक कुल 2295.61 करोड़ रुपए की कुर्की और जब्ती की गई है।

40 बरस बाद भी न्याय की आस लगाए हैं पीड़ित

सिने क्लासिक में गैस त्रासदी पर डाक्यूमेंट्री फ़िल्में

भोपाल। मोती हो कि शीशा जाम कि दुर, जो टूट गया सो टूट गया। कब अश्कों से जुड़ सकता है जो टूट गया सो छूट गया। तुम नाहक़ टुकड़े चुन-चुन कर दामन में छुपाए बैठे हो। शीशों का मसीहा कोई नहीं क्या आस लगाए बैठे हो। मशहूर शायर फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की इस कालजयी नज़्म पर प्रसिद्ध फ़िल्मकार मुज़फ़्फ़र अली ने फ़िल्म 'शीशों का मसीहा' को बहुत खूबसूरती से रचा है।

सन 1985 में बनी ये डॉक्यूमेंट्री भोपाल गैस त्रासदी के गहरे असर को गंभीरता से बयाँ करती है साथ ही जताती है कि सरकार द्वारा किए गए काम नाकाफ़ी हैं और प्रभावितों की उम्मीद बहुत ज़्यादा। गैस त्रासदी की 40वीं बरसी पर आज सिने क्लासिक के अंतर्गत गैस त्रासदी पर बनी कुछ डॉक्युमेंट्रीज़ को दिखाया गया।

गमन और उमराव जान फ़ेम के मुज़फ़्फ़र अली की फ़िल्म में कई इंटरव्यू के ज़रिए पीड़ितों का दर्द छलकता है। हिलते-धुलते शॉट और लो-बैंड वीडियो का पुराना पड़ चुका प्रिंट थोड़ा खटकता है। गैस रानी को समर्पित ये फ़िल्म 28 मिनट की थी।

दूसरी महत्त्वपूर्ण थी 'बरियल ऑफ़ ड्रीम्स' जिसके निदेशक हैं केरल के प्रसिद्ध फ़िल्मकार आर सरथ। अत्याधुनिक फ़ोर के में बनी इस फ़िल्म में बेहतरीन शॉट्स हैं। पुराने और नए फ़ुटेज के सम्मिश्रण से पड़ताल करती एक रोचक फ़िल्म बन पड़ी है।

फ़िल्म को वास्तविक सा दिखाने के लिए डॉक्यू-ड्रामा स्टाइल में कुछ हिस्से शूट किए गए हैं। ड्रोन शॉट्स और लंबे टेक्स फ़िल्म को नया कलेवर देते हैं। 38 मिनट की ये फ़िल्म इंग्लिश में है। ये फ़िल्म बताती है कि पीड़ित चालीस साल की यात्रा में कहाँ से कहाँ पहुँचे और न्याय की उम्मीद में अभी भी आस लगाए हैं। अचंभा ये कि इतनी बड़ी दुर्घटना में आज तक किसी को भी सज़ा नहीं हुई।

राज्यपाल श्री पटेल को ध्वज लगाया

राजभवन में सशस्त्र झंडा दिवस मना

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल को राजभवन में सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर ध्वज लगाया गया। राज्यपाल श्री पटेल को सैनिक कल्याण संचालनालय मध्यप्रदेश के अतिरिक्त संचालक,

सेवानिवृत्त कर्नल संजय प्रधान ने ध्वज लगाया। राज्यपाल श्री पटेल ने इस अवसर पर सशस्त्र सेना कल्याण निधि के लिए सहयोग राशि प्रदान की।राज्यपाल श्री पटेल ने नागरिकों से अपील की है कि सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर अपनी क्षमता से बढ़कर अशंदान के भाव और भावनाओं के साथ अधिक से अधिक राशि का अशंदान करें। सशस्त्र सेना के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता के प्रदार्शन में सहभागी बनें।

भोपाल मंडल की खंडवा-बीड पैसेंजर स्पेशल ट्रेनों के नंबर होंगे नियमित

भोपाल। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया ने बताया कि रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार सभी यात्री ट्रेनें जो पीएसपीसी नंबर (अर्थात '0' से शुरू होने वाले नंबर) के साथ चल रही हैं, उन्हें पुनः नियमित ट्रेन नंबर (जैसा कि पूर्व-कोविड अवधि में चल रही थी) के साथ चलाया जाएगा।

भोपाल मंडल से गुजरने वाली खंडवा-बीड पैसेंजर स्पेशल ट्रेनों का पुनः नंबर निर्धारण किया गया है। वर्तमान '0' नंबर प्रणाली के बजाय इन्हें नियमित ट्रेन नंबर से चलाया जाएगा। यह परिवर्तन 01.01.2025 से प्रभावी होगा। नई और पुरानी ट्रेन नंबरों का विवरण निम्नलिखित है।

1. गाड़ी संख्या 05685 खंडवा-बीड पैसेंजर स्पेशल अब नियमित गाड़ी संख्या 51685 से संचालित होगी।
2. गाड़ी संख्या 05686 बीड-खंडवा पैसेंजर स्पेशल अब नियमित गाड़ी संख्या 51686 से संचालित होगी।
3. गाड़ी संख्या 05689 खंडवा-बीड पैसेंजर स्पेशल अब नियमित गाड़ी संख्या 51683 से संचालित होगी।
4. गाड़ी संख्या 05690 बीड-खंडवा पैसेंजर स्पेशल अब नियमित गाड़ी संख्या 51684 से संचालित होगी।
5. गाड़ी संख्या 05691 खंडवा-बीड पैसेंजर स्पेशल अब नियमित गाड़ी संख्या 51687 से संचालित होगी।
6. गाड़ी संख्या 05692 बीड-खंडवा पैसेंजर स्पेशल अब नियमित गाड़ी संख्या 51688 से संचालित होगी।

इस परिवर्तन का उद्देश्य यात्रियों की सुविधा और ट्रेनों की पहचान को सरल बनाना है। सभी यात्रियों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा से पहले नई ट्रेन नंबर की जानकारी प्राप्त कर लें। इस नई व्यवस्था से संबंधित किसी भी जानकारी या सहायता के लिए यात्री रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट या हेल्पलाइन नंबर 139 पर संपर्क कर सकते हैं।

पिता ने रस्सी से गला घोंटकर की बेटे की हत्या

30 हजार नहीं देने पर युवक कर रहा था मारपीट, पत्नी की शिकायत पर पति अरेस्ट

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हनुमानगंज इलाके में एक पिता ने अपने बेटे की रस्सी से गला घोंटकर हत्या कर दी। घटना का पता चलते ही मृतक की मां थाने पहुंची और पूरी बात पुलिस को बता दी। इसके बाद घर पहुंची पुलिस ने आरोपी पिता को अरेस्ट कर लिया। साथ ही पुलिस ने आरोपी पिता के खिलाफ हत्या का केस भी दर्ज कर लिया। घटना शुक्रवार शाम की है।

पत्नी बोली- पति ने की बेटे की हत्या

टीआई अवधेश सिंह भदौरिया के मुताबिक, हेमंत पिता वृंदावन नामदेव (28) बाल बिहार में रहता था। वह मानसिक रूप से बीमार था। उसके पिता वृंदावन नामदेव टेलर का काम करते थे। शुक्रवार शाम हेमंत की मां दुर्गा बाई थाने पहुंची और पुलिस को बताया कि उसके बेटे की हत्या पति ने कर दी है। घटना की खबर लगते ही घर पहुंची पुलिस ने आरोपी पिता को हिरासत में ले लिया। साथ ही पुलिस ने मृतक का शव बरामद कर उसे पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

30 हजार रुपए नहीं देने पर युवक कर रहा था मारपीट

मृतक के पिता ने पुलिस को बताया कि, बेटा मानसिक रूप से बीमार था और आए दिन माता-पिता के साथ मारपीट किया करता था। शुक्रवार शाम को बेटे ने पहले बीयर की मांग की, जिस पर पिता ने उसे बियर लाकर दे दी। इसके बाद हेमंत पिता को 30 हजार रुपए देने को कहने लगा। मना करने पर वो मारपीट करने लगा। जिससे परेशान होकर उसने नायलोन की रस्सी से गला घोंटकर बेटे की हत्या की है। पुलिस ने महिला की शिकायत पर पति के खिलाफ केस दर्ज किया है। आज पीएम होने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया जाएगा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

नशे का आदी था युवक

परिजन के मुताबिक हेमंत उर्फ हनी बचपन से ही मानसिक रूप से बीमार था। जब से वो जवान अवस्था में आया तो गलत संगत में पड़ गया। नशे का आदी हो गया था। बार-बार घर वालों से पैसों की डिमांड करता था। हनी के पिता एक दर्जी हैं और छोटा भाई योगेश की दुकान में काम करता है। परिवार की आर्थिक स्थिति भी कमजोर है। जिससे वो हनी की मांग पूरा नहीं कर सकते थे। जिससे वो माता-पिता के साथ मारपीट करता था।

थाने पहुंचकर मां ने दी थी सूचना- बेटे की हत्या की सूचना मां ने थाने में पहुंचने के बाद पुलिस को दी थी। बताया कि पति ने उनके बेटे की हत्या कर दी है। वह हमें पीट रहा था, घर का सारा सामान तोड़ चुका था। आए दिन परेशान करता था। रात करीब 8 बजे उसने नशे में अपने पिता पर हाथ उठाया, वह परेशान हो चुके थे। इस कारण उसकी हत्या कर दी।

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं संगठन पर्व की केंद्रीय पर्यवेक्षक सुश्री सरोज पाण्डेय, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने संगठन पर्व को लेकर शनिवार को सतना में रीवा व शहडोल संभाग की बैठक को संबोधित किया। इस दौरान मंच पर प्रदेश महामंत्री श्री सरदेन्दू तिवारी उपस्थित रहे। बैठक में रीवा व शहडोल संभाग के पार्टी पदाधिकारी, समस्त जिला अध्यक्ष, पर्यवेक्षक, जिला निर्वाचन अधिकारी एवं सह निर्वाचन अधिकारी मौजूद रहे।

बीटेक का छात्र फांसी के फंदे पर झूला

मरने से पहले पिता को बोला- नया बैंक अकाउंट खुला दो, पुराने में दिक्कत

भोपाल (नप्र)। आनंद नगर की मानक बिहार कॉलोनी में किराए का कमरा लेकर रहने वाले बीटेक के छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फिलहाल आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। उसकी पिता से आखिरी बातचीत रविवार को हुई थी।तब उसने नया बैंक अकाउंट खुलवाने कहा था, मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी हैं।छात्र जाहर रजक जिसने फांसी के फंदे पर झूलकर आत्महत्या कर ली हैं।

पिपलानी पुलिस के मुताबिक जाहर रजक (19) पुत्र बृजमोहन रजक मूल रूप से छतरपुर का रहने वाला था। फिलहाल आनंद नगर की मानक बिहार कॉलोनी में गंगाराम साहू के मकान की तीसरी मंजिल के एक कमरे में किराए से रहता था। उसके पिता बृजमोहन रजक ने बताया कि जाहर घर पर कम ही बातचीत करता था, अधिकांश कॉल वह मां को ही किया करता था।

रविवार को उसका कॉल आया था, तब

बेटे ने बताया कि पुराने अकाउंट में कुछ समस्या होती है, उसका एटीएम बूथ भी आम तौर पर नहीं मिलता है। जिससे पैसा निकालने में दिक्कत होती है। पैसा भी खत्म हो गया है। नया अकाउंट खुलवा दो, आगे से पैसा उसी में भेजना। इसके बाद उसका कॉल नहीं आया। सोमवार को मां ने कॉल किया तो उसने नहीं उठाया। लगा कि व्यस्त होगा, पढ़ रहा होगा, इस कारण नहीं उठा रहा है।

रूम मेट भी था गांव पर

उसके साथ अभय नाम का रूम मेट भी रहता था। दोनों आस पास के गांव के रहने वाले हैं। उम्र में अभय छोटा था लेकिन रिश्ते में उसका मामा था। बीते एक सप्ताह से वह भी अपने गांव गया हुआ था। इस दौरान जाहर अकेला रह रहा था। शुक्रवार तक जब लगातार उसने कॉल नहीं पिक किए तो परिजनों ने मकान मालिक व अन्य साथियों से रूम चेक करने को कहा।

आवाज देने पर गेट नहीं खुला, तब पुलिस को सूचना दी गई। शुक्रवार की रात सूचना पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह से दरवाजा खोला तो जाहर गमछे के फंदे से लटका दिखाई दिया।पुलिस का अनुमान है कि बॉडी तीन-चार दिन पुरानी है। शव डी कम्पोज्ड होना शुरू हो चुका था।

मकान मालिक ने बताया कि आखिरी फ्लोर पर रूम होने के कारण कई-कई दिन तक जाहर से आमना-सामना नहीं होता था। लिहाजा उसके आने और जाने का ध्यान नहीं रहता था। पुलिस हर एंगल पर मामले की जांच कर रही हैं।

13 दिसंबर को होगी भोपाल निगम परिषद की मीटिंग

एमआईसी से मंजूर 21 मुद्दों को रखेंगे, 3 महीने बाद होगी बैठक

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम परिषद की मीटिंग की डेट फाइनल हो गई है। यह 13 दिसंबर को सुबह 11 बजे होगी। एमआईसी से मंजूर 21 मुद्दों के प्रस्ताव को परिषद की मीटिंग में रखेंगे। नियमानुसार दो महीने में मीटिंग होनी चाहिए, लेकिन यह 3 महीने के बाद होगी। ऐसे में विपक्ष

हंगामा कर सकता है। निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने बताया, परिषद की मीटिंग में निर्धारित एजेंडे पर चर्चा की जाएगी।

बैठक को लेकर सियासत गरम- बता दें कि नगर निगम परिषद की मीटिंग की तारीख तय नहीं होने से सियासत गरमा गई थी। कांग्रेस पार्षद खुलकर 'हर सरकार' पर आरोप लगा रहे थे। इसी बीच शुक्रवार को एमआईसी (मेयर इन कौंसिल) की मीटिंग में 22 में से 21 विषयों को मंजूरी दे दी गई। एमआईसी के बाद परिषद की मीटिंग की तारीख भी तय कर ली गई। हालांकि, शनिवार को यह डेट सामने आई।

9 करोड़ रुपए से संवरेगा शाहपुरा तालाब- एमआईसी बैठक में शाहपुरा तालाब, अमृत-2 जैसे 20 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है। शाहपुरा तालाब का सौंदर्यीकरण और व्यवस्थित करने का भी निर्णय लिया गया है। यहां फुटपाथ निर्माण के सा?थ ही तालाब में मिलने वाले सीवेज के पानी को रोकने बंदोबस्त किए जाएंगे। इस पर 9.16 करोड़ रुपए खर्च होगा। स्मार्ट नेविगेशन डिवाइस लगाने वाली कंपनी यूनिकॉर्न सॉल्यूशन का एग्रीमेंट खत्म कर उसे ब्लैक लिस्टेड कर दिया गया है। ऐसे में शहर में लगी 100 से ज्यादा इन गेंट्री का संचालन नगर निगम की ओर से किया जाएगा। यही नहीं, अमृत प्रोजेक्ट के तहत शहर में 5 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की लागत से पानी की पाइपलाइन बिछाए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई। यही प्रस्ताव अब परिषद की मीटिंग में रखे जाएंगे।

इन प्रस्तावों को भी रखेंगे

- शहर में चल रहे एचएफए के सभी प्रोजेक्ट की समय सीमा बढ़ाकर 2025-26 तक की गई है।
- नगर निगम के शेष खाली बचे सामुदायिक भवनों को तीन साल के किराए पर दिया जाएगा।
- करीब साढ़े चार करोड़ रुपए की लागत से आरएएफ कैंपस हिनोतिया में पानी की पाइप लाइन बिछाई जाएगी।
- निगम अपने कम्युनिटी हॉल 3 साल के लिए लाइसेंस शुल्क लेकर संस्थाओं को आवंटित करेगा।

मध्य प्रदेश में 11 और छत्तीसगढ़ में 4 नए केंद्रीय विद्यालय खोले जाएंगे, ये सभी पीएम-श्री स्कूलों के रूप में करेंगे काम

स्कूलों में 1300 से ज्यादा लोगों को नौकरी भी मिलेगी

भोपाल(नप्र)। केंद्र सरकार देश में 58 नए केंद्रीय विद्यालय खोलने की घोषणा की है। इनमें से 11 विद्यालय मध्य प्रदेश और 4 केंद्रीय विद्यालय छत्तीसगढ़ में खुलेंगे। इन विद्यालयों के खोलने पर अगले आठ सालों में आठ हजार करोड़ रुपये से अधिक खर्च होंगे। यह सभी पीएम-श्री स्कूलों के रूप में कार्य करेंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में शुक्रवार को हुई कैबिनेट बैठक में यह अहम फैसला लिया गया है। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि ये 85 नए केंद्रीय विद्यालय देश के 19 राज्यों में खोले जाएंगे।

82 हजार से अधिक विद्यार्थियों को मिलेगी शिक्षा- उन्होंने बताया कि 85 नए केंद्रीय विद्यालयों के खुलने से इनमें 82 हजार से अधिक छात्रों को शिक्षा मिल सकेगी। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कैबिनेट के इस फैसले को शिक्षा क्षेत्र को बढ़ावा देने की दिशा में बड़ा कदम बताया है।

केंद्रीय विद्यालय को अपग्रेड भी किया जाएगा- मंत्री ने कहा कि इस फैसले से 21 वीं सदी के लिए ग्लोबल सिटिजन को तैयार करने में मदद मिलेगी। कैबिनेट ने कर्नाटक के शिमोगा जिले में पहले से मौजूद एक केंद्रीय विद्यालय को अपग्रेड भी किया है। वहीं 28 नए नवोदय विद्यालयों के खुलने से 15 हजार से अधिक छात्रों को इनमें प्रवेश मिलेगा।

1300 से अधिक लोगों को मिलेगी नौकरी- साथ ही 1300 से अधिक नए लोगों को शिक्षक सहित दूसरे पदों पर नौकरी भी मिलेगी। मौजूदा समय में 1,256 केंद्रीय विद्यालय हैं। इधर नए केंद्रीय विद्यायलय खोले जाने के निर्णय पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया है।

मप्र में 11 नए केंद्रीय विद्यालय खुलेंगे

1. अशोक नगर
2. नागदा (उज्जैन)
3. मैहर
4. तिरोड़ी (बालाघाट)
5. बरघाट (सिवनी)
6. निवाड़ी
7. खजुराहो (छतरपुर)
8. झिंझरी (कटनी)
9. सबलगढ़ (मुरैना)
10. नरसिंहगढ़ (राजगढ़)
11. सेंट्रल एकेडमी पुलिस ट्रेनिंग परिसर, कान्हासैया (भोपाल)

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू बोले

म.प्र. में दलितों की सबसे ज्यादा सरकारी-हत्याएं

दलित उत्पीड़न पर अब विधानसभा में भी जवाब दे मोहन सरकार

भोपाल। मध्य प्रदेश में दलितों पर बढ़ते अत्याचार ने पूरे देश को झकझोर दिया है। दलितों के दर्द से देश के दिल दुखी है, क्योंकि मध्यप्रदेश में दलितों की सबसे ज्यादा ''सरकारी-हत्याएं'' हो रही हैं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मीडिया से बातचीत में मोहन यादव सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार बाबा साहब अंबेडकर के सिद्धांतों की केवल औपचारिक बातें करती है, लेकिन ज़मीन पर हालात चिंताजनक हैं।

मध्यप्रदेश दलित उत्पीड़न के टॉप - 3 में- प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने आंकड़ों के साथ बात करते हुए बताया कि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो और सामाजिक न्याय मंत्रालय के दस्तावेज बताते हैं कि दलित अत्याचार के मामले सबसे ज्यादा भाजपा शासित राज्यों में ही दर्ज होते हैं। देश के प्रथम तीन राज्यों का उदाहरण देते हुए पटवारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश पर 2022 में 15,368 मामले, राजस्थान में 8,752 और तीसरे नंबर पर मध्य प्रदेश के 7,733 मामलों का कलंक लगा हुआ है। मध्य प्रदेश में दलित उत्पीड़न के मामलों में 2018 से 2021 के बीच 51.7 प्रतिशत वृद्धि हुई है। तब भी प्रति लाख जनसंख्या पर 63 से अधिक अपराध दर्ज हो रहे थे।

भाजपा की कथनी और करनी में अंतर- श्री पटवारी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस बयान पर सवाल उठाया जिसमें उन्होंने कहा था कि, संविधान हमारे लिए सबकुछ है। संविधान को कोई नहीं बदल सकता। बाबा साहेब आ भी जाएं, तो अब संविधान नहीं बदला जा सकता।प्रधानमंत्री मोदी का यह झूठ तब सबूत के रूप में सामने आया, जब बाबा साहेब अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर ही मध्य प्रदेश में दलितों की हत्याएं हो गईं और भाजपा सरकार खामोश बैठी रही। न्याय की धीमी प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए प्रदेश कांग्रेस प्रमुख ने कहा कि दलित अपराधों में सजा की दर में भी गिरावट आई है। 2020 में 39.2 प्रतिशत सजा दर 2022 में घटकर 32.4 प्रतिशत रह गई।

दलित सुरक्षा, सरकारी विफलता

पीसीसी चीफ ने कहा कि क्या भाजपा सरकार दलितों की सुरक्षा सुनिश्चित कर पाएगी, यह सवाल आज हर वर्ग के सामने है। इसलिए, सरकार विधानसभा के आगामी सत्र में दलित उत्पीड़न की स्थिति और सुधार के लिए उठाए गए कदमों पर चर्चा करे। यह इसलिए आवश्यक है कि मप्र में दलितों की सुरक्षा के लिए अब तक सरकार ने कोई कदक नहीं उठाए हैं।

दिल दहला रही दलितों पर हिंसा

पटवारी ने कहा कि मंदसौर में दलित महिला की गोली मारकर जान ले ली गई और राजगढ़ में भी दलित युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। दोनों ही घटनाएं प्रदेश की लचर कानून व्यवस्था और गृहमंत्री की लाचारी की निशानी है। पटवारी ने कहा कि मध्य प्रदेश में दलित उत्पीड़न का घटनाक्रम लगातार बना हुआ है। नवंबर में शिवपुरी ज़िले के इंदरगढ़ गांव में एक दलित युवक की पानी के लिए हुए विवाद में पीट-पीट कर हत्या कर दी गई। सीहोर ज़िले के इछावर के पास खेरी गांव में दलितों को मंदिरों प्रवेश से रोका गया। कटनी में जीआरपी पुलिस द्वारा एक दलित बच्चे और महिला को बेरहमी से पीटा गया। मंदसौर जिले में ही दलित व्यक्ति को अर्धनग्न अवस्था में, चेहरे पर कालिख पोतकर, गले में जूतों की माला लटकाकर, गलियों में घुमाया गया। श्री पटवारी ने कहा कि दलित उत्पीड़न की इस लंबी फेहरिस्त में सागर में 3 सगे भाई-बहनों की हत्या, छतरपुर में एक दलित परिवार की सामूहिक पिटाई, इंदौर में दलितों को बंधक बनाकर घंटों तक पीटा जाना, छतरपुर में दलितों पर मल फेंकना, शिवपुरी जिले में दलितों को मैला खाने के लिए मजबूर करने जैसी कई शर्मनाक घटनाएं भी शामिल हैं।

एम्स भोपाल में जल्द ही शुरू होंगे हाइब्रिड कार्डियक ऑपरेटिंग रूम्स

बताई हाइब्रिड कार्डियक ऑपरेटिंग रूम्स की भूमिका, कहा- जटिलताओं का जोखिम होगा कम

भोपाल (नप्र)। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में, संस्थान ने शोध और चिकित्सा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं। उनके मार्गदर्शन में एम्स भोपाल के कार्डियो थोरासिक और वैस्कुलर सर्जरी विभाग के सहायक प्रोफेसर, डॉ. विक्रम वट्टी ने कॉन्जेनिटल एंड स्ट्रक्चरल हार्ट (सीएएसएच) इंटरवेंशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम में सफलतापूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम चेन्नई में मद्रास मेडिकल मिशन द्वारा 29 नवंबर से 1 दिसंबर 2024 तक आयोजित किया गया था। प्रो. सिंह ने इस उपलब्धि पर डॉ. विक्रम वट्टी को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा, इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में डॉ. वट्टी की भागीदारी हमारे फैकल्टी की क्षमता और सतत व्यावसायिक विकास पर एम्स भोपाल के फोकस का प्रमाण है। इस तरह के अवसर विशेष चिकित्सा देखभाल को आगे बढ़ाने और हमारे संस्थान को भारत में स्वास्थ्य सेवा नवाचार के अग्रणी के रूप में बनाए

रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इस अवसर पर डॉ. वट्टी ने हाइब्रिड कार्डियक ऑपरेटिंग रूम्स की भूमिका और इसके आधुनिक हृदय देखभाल में योगदान के बारे में अपने विचार साझा किए। हाइब्रिड कार्डियक ऑपरेटिंग रूम्स एक अत्याधुनिक सर्जिकल सुइट है, जिसमें उन्नत इमेजिंग तकनीक और सभी सुविधाओं से युक्त ऑपरेटिंग रूम की सुविधाएं एक साथ मिलती हैं। इस नवाचार के माध्यम से डॉक्टर पारंपरिक सर्जिकल प्रक्रियाओं और मिनिमली इनवेसिव इंटरवेंशनल टेक्निक्स को एक ही स्थान पर बिना किसी विघ्न के कर सकते हैं। हाइब्रिड कार्डियक सर्जरी का उपयोग विभिन्न हृदय रोगों के इलाज के लिए किया जाता है, जैसे कि एंडोवस्कुलर एओर्टिक रिपेयर, हाइब्रिड कोरोनरी आर्टरी रिवास्कुलराइजेशन, हाइब्रिड एरिथमिया प्रक्रियाएं, और हाइब्रिड कॉन्जेनिटल प्रक्रियाएं। डॉ. वट्टी ने कहा कि हाइब्रिड कार्डियक सर्जरी के कई लाभ हैं, जैसे कि सर्जिकल जटिलताओं का जोखिम कम होना, रिकवरी में कम समय लगना। इस कारण मरीजों एवं उनके परिवारों को भी कम तनाव होगा। हाइब्रिड सर्जरी को एक स्टेज या दो स्टेज प्रक्रिया के रूप में किया जा सकता है। एक स्टेज प्रक्रिया में सभी उपचार एक ही सत्र में किए जाते हैं, जबकि दो स्टेज प्रक्रिया में कैथिटर-बेस्ड इंटरवेंशंस और शल्य चिकित्सा के बीच एक अंतराल होता है। मद्रास मेडिकल मिशन ने देश भर से 20 कार्डियोलॉजिस्ट को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। हालांकि, डॉ. विक्रम वट्टी इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में आमंत्रित होने वाले एकमात्र कार्डियक सर्जन थे। यह कार्यक्रम मद्रास मेडिकल मिशन के डॉ. के. शिव कुमार के नेतृत्व में आयोजित किया गया जिसने देश के अग्रणी चिकित्सा विशेषज्ञों के बीच कौशल विकास, व्यावहारिक प्रशिक्षण और ज्ञान साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

पुस्तक परिचय

जवाहर चौधरी

इतिहास की सबसे बड़ी भूल का खलनायक

1947 का विभाजन भारतीय इतिहास के वे दुखद पन्ने हैं जिन्हें बार-बार पढ़ा जाता है । खासकर यह जानने के लिए कि चूक कहाँ हो गई, गलती किससे हुई, विभाजन का खलनायक कौन है । अखंड भारत का सपना हर आँख में पल रहा था, आज भी पल रहा है । लेकिन जब देश आजाद होने लगा तो अंग्रेजों के शासन में जितना भारत था उसमें से भी दो बड़े हिस्से कट जाएँगे यह किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं था। विभाजन की यह घटना आज भी भारतीयों को टीसती है । इसकी पड़ताल के लिए सामान्य जिज्ञासु भी बार बार इतिहास तक पहुँचता है।

1857 की क्रांति के समय अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर तख्त पर थे। जब क्रांतिकारी सैनिक लड़ते हुए दिल्ली पहुँचे तो उन्होंने बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में आगे की लड़ाई लड़ी। लड़ाके सैनिकों में हिंदू-मुसलमान-सिक्ख सब थे। औरंगजेब और दूसरे बादशाहों के अच्छे बुरे कामों को भूलकर सारे लोग एक हो गए थे । लेकिन क्रांति को कुचल दिया गया। हजारों सैनिकों को मौत की सजा दी गई। उस समय सांप्रदायिक सौहार्द अच्छा था। अंग्रेजों से लड़ने के लिए हिंदू और मुसलमान दोनों मिलकर काम कर रहे थे। आजादी की लड़ाई का संघर्ष भी दोनों ने मिलकर शुरू किया। सवाल यही है की दूसरी लड़ाई के बीच ऐसा क्या हुआ कि हिंदू मुस्लिम ही नहीं बँटे बल्कि देश भी बँट गया !

समय के इन कमजोर लेकिन कठिन दिनों का परीक्षण अनेक विद्वानों और इतिहासकारों ने किया है । प्रोफेसर इश्तियाक अहमद की ताजा किताब 'जिन्ना - हिज सक्सेस, फैलियर्स एंड रोल इन हिस्ट्री' का हिंदी अनुवाद 'जिन्ना - उनकी सफलताएँ, विफलताएँ और इतिहास में भूमिका' एक शोधपूर्ण अध्ययन है। जिन्ना के माध्यम से प्रोफेसर इश्तियाक अहमद ने आजादी के संघर्ष के पूरे कालखंड को देखने का प्रयास किया है। हालाँकि जिन्ना को लेकर अनेक अध्ययन हुए हैं । बहुत सी किताबें प्रकाशित हुई हैं जिनमें भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण के संबंध में ऐतिहासिक घटनाएँ बिखरी पड़ी है किंतु इस किताब के जरिए पाठक जान पाता है कि वह कौन सी बातें थी जो राष्ट्रवादी कांग्रेसी जिन्ना को विभाजनकारी जिन्ना में बदल देती है।

जिन्ना 1906 में कांग्रेस के सदस्य बन गए थे और आजादी के संघर्ष में सक्रिय भी थे। गाँधी जी 1915 में अफ्रीका से लौटे और 1919 से कांग्रेस ने उनके नेतृत्व में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देना शुरू किया । किताब बताती है कि जिन्ना को लगता था की गाँधी ने आकर उन्हें किनारे कर दिया है। वे सीनियर थे और अपने को देश का लीडर मान रहे थे। इधर जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, बालगंगाधर तिलक आदि भी गाँधी के साथ जुड़ गए। गाँधी अपने साथ अफ्रीका में आंदोलन की सफलता लेकर आए थे। गाँधी का कद अचानक बढ़ने लगा और जिन्ना अपने को उपेक्षित समझने लगे। किताब में लिखा है -

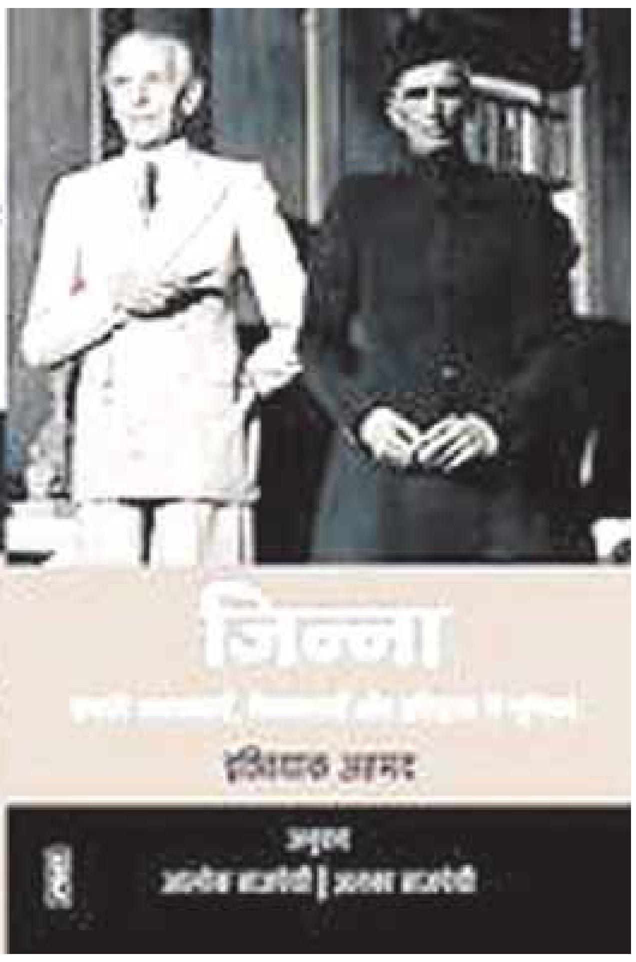

जाहिर है जिन्ना और गाँधी के कद के नेता अपने को दूसरे से नंबर दो नहीं मान सकते थे। और दोनों एक ही आंदोलन के प्रमुख नेता नहीं हो सकते थे।.... इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन्ना गाँधी की छाया में दूसरी पंक्ति का दर्जा स्वीकार करने को तैयार नहीं थे।÷ धीरे-धीरे जिन्ना में उपेक्षा की भावना गहराती गई। वे मुसलमानों के नेता होते गए और वे गाँधी को हिंदू नेता की तरह देखने लगे। माडर्न लाइफ स्टाइल जीने वाले जिन्ना के लिए जरूरी हो गया कि वे हाल हुलिये और विचारों से मुस्लिमों के लीडर लगें । लगता है कि मुस्लिम राष्ट्रवाद के वैचारिक आधार और अलग मुस्लिम राज्यों की माँग में इस मनोवैज्ञानिक स्थिति की भूमिका थी।

लगभग 700 पृष्ठों में दर्ज जिन्ना को यह पुस्तक खोलती जाती है। इश्तियाक अहमद स्कॉटहोम यूनिवर्सिटी स्वीडन में राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर रहे हैं और अनेक शोधपूर्ण किताबों के लेखक हैं । उनका लेखन न केवल पाकिस्तान बल्कि एशिया के अनेक देशों में विद्वानों का ध्यान खींचता रहा है । ऐसा लग सकता है कि उन्होंने जिन्ना के पक्ष में लिखा हो। यह कहना होगा कि वे जिन्ना के माध्यम से आजादी के संघर्ष का तटस्थ मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं।

कई जानकारियाँ ऐसी है इस पुस्तक में जो हमें चौंकती भी हैं हालाँकि वे पहली बार उद्घाटित नहीं हो रही हैं । जैसे जिन्ना भारत में संघर्ष के समय अलगाव तथा द्वि-राष्ट की अवधारणा देते हैं । वे अपने भाषणों में कहते हैं कि हिंदू और मुस्लिम दोनों कौमें एक साथ नहीं रह सकती हैं । दोनों की भाषा, तौर-तरीके, संस्कृति, सभ्यता आदि सब अलग-अलग हैं । इस तरह वे दो कौमें नहीं दो राष्ट है । और दो राष्टों के लिए एक सामान्य भू भाग नहीं हो सकता। इसलिए विभाजन जरूरी है। लेकिन यही जिन्ना जब पाकिस्तान बन जाता है तो अपने उद्बोधन में धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद की बात कहते हैं। जाहिर है जनता को यह बात रास नहीं आती। जो लोग धर्म के आधार पर अलग हुए वे धर्मनिरपेक्षता को कैसे स्वीकार कर सकते हैं। यहाँ मुसलमानों में जिन्ना की लोकप्रियता घटती है । कहा तो यह भी जाता है कि उन्हें पाकिस्तान बनवाने पर पछतावा भी था । जिन्ना का एक और कथित बयान जिसे जावेद उद्धरत करती है वह है - मैंने पाकिस्तान बनाकर सबसे बड़ी गलती की है और मैं दिल्ली जाकर नेहरू से कहना चाहूँगा कि अतीत की मूर्खताओं को भूल जाओ और फिर से दोस्त बन जाओ। ÷ एक और प्रसंग में वह कहते हैं - आप नहीं जानते कि मैं मुंबई से कितना प्यार करता हूँ । मैं अभी वहाँ वापस जाने के लिए उत्सुक हूँ ।

यह पुस्तक ऐसे समय आई है जब धर्म समर्थित विचार उबाल पर हैं । यदि आपकी भी जिज्ञासा अपने इतिहास को जानने और कई जटिल प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में है तो सेतु प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक पढ़ने योग्य है। पेपर बैग संस्करण की कीमत -700 है। अंग्रेजी से पुस्तक का बहुत सुंदर अनुवाद आलोक वाजपेई और अलका वाजपेई ने किया है।

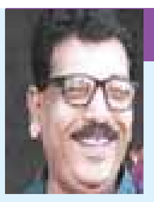

लघुकथा

दिव्यांग और समानुभूति

डॉ.कारुलाल 'कारुण्य'

जैसे ही अनुभूति ने उस बुजुर्ग को लड़खड़ाकर घसिटते हुए सड़क पार अस्पताल की ओर आते देखा, उसने अपनी जान की परवाह किए बगैर अपनी व्हीलचेयर उसकी ओर लुढ़का दी और इसके पहले कि तेजी से आ रहे ट्रक में वह कुचले उसे अपनी ओर खींच लिया। उसी समय वहां उपस्थित कुछ लोगों ने, जो उस

बुजुर्ग के परिचित थे और सारा घटनाक्रम देख रहे थे, लड़की को शाबाशी देते हुए कहा कि इतने कम समय में उसने कैसे तुरंत निर्णय लेते हुए उस अनजान बुजुर्ग को जान बचा ली जबकि वे तो चाहते हुए भी कोशिश नहीं कर पाये। जवाब में अनुभूति ने कहा-- यह बहुत आसान है बशर्ते इंसान में समानूभूति की भावना हो। घायल होंने के नाते मैं इनकी लड़खड़ाहट देखते ही भांप गई थी कि ये दिव्यांग हो या न हो पर निऱ्शक्त अवश्य है। हम दिव्यांग के प्रति केवल सहानुभूति से नहीं अपितु समानुभूति से ही यह पीड़ा समझ पाते हैं। इसके लिए घायल होना भी जरूरी नहीं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कहानी

सुनील कुमार महला

हथियार

विकास बारहवीं कक्षा का छात्र था और आज उसका बारहवीं का लास्ट एक्जाम था। इसलिए सुबह से ही विकास अपनी कक्षा के अन्य सभी सहपाठियों की तरह बहुत ही खुशमिजाज नज़र रहा था, क्यों कि रिजल्ट आने के बाद वह कालेज में हो जाएगा। अपना बारहवीं कक्षा का लास्ट एक्जाम देकर विकास शाम को खुशी से चहकते हुए अपने घर वापस आ गया। उसकी बारहवीं की परीक्षा आज खत्म हो चुकी थी और अब उसे कुछ दिनों तक के लिए कोई भी चिंता नहीं थी। अब वह खेलकूद सकता था, मौज-मस्ती कर सकता था, दोस्तों संग फन-टाइम एंजॉय कर सकता था। उस दिन विकास अपनी मम्मा और डैड के साथ शहर के एक होटल में डिनर करने गया और खूब एंजॉय किया। अगले दिन, सुबह-सुबह विकास की मम्मा कादम्बिनी घर की साफ-सफाई में जुटी में थी। घर की साफ-सफाई करते हुए वह विकास के कमरे में पहुंचीं, विकास का कमरा एक्जाम के कारण काफी दिनों से बहुत ही अस्त-व्यस्त था। विकास को कमरा ठीक से जंचाने/कमरे को सुव्यवस्थित, साफ व स्वच्छ रखने का समय ही नहीं मिल पा रहा था। उसकी मम्मा कादम्बिनी भी सिलाई के काम के कारण घर में काफी व्यस्त थी। आज विकास के एक्जाम खत्म होने के बाद उसने विकास के कमरे की साफ-सफाई के लिए थोड़ा समय निकाल लिया था।

कादम्बिनी ने देखा कि कहीं टेबल पर विकास की बारहवीं कक्षा की पुस्तकें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, तो कहीं पर नोटबुक्स तो कहीं पुराने पेन, पेंसिल ,शार्पनर, कम्पास, प्रोट्रैक्टर, कैलकुलेटर तो कहीं स्कूल बैग तो कहीं उसके स्कूली जूते और वर्दी। विकास का सामान कमरे में यूं बिखरा देखकर विकास की मम्मा कादम्बिनी ने विकास से कहा- बेटा विकास ! ज़रा इधर तो आओ। देखो बेटा, अब तुम्हारी बारहवीं की परीक्षाएं भी खत्म हो गई है, और बारहवीं के रिजल्ट के बाद तुम्हें कालेज में एडमिशन लेना है। पुरानी किताबें, स्टेशनरी का सामान और तुम्हारा स्कूल बैग, जूते और वर्दी अब तुम्हारे तो काम में आने से रहे। ऐसे करेंगे ये सारा सामान(स्टेशनरी आइटम्स,जूते वगैरह) हम कबाड़ वाले को क्यों न दे दें ? कबाड़ बेचकर इनसे जो चार रूपए आयेंगे, उन पैसों में कुछ और पैसे मिलाकर तुम्हारे लिए तुम्हारे डैड तुम्हारी नयी कक्षा के लिए किताबें,बैग, स्टेशनरी जूते आदि खरीद लेंगे। यूं ही पिछले काफी समय से तुम्हारा कमरा आलतू-फालतू के सामान से अटा पड़ा है और इसकी वज़ह से मैं ठीक से तुम्हारे कमरे की साफ़- सफाई भी नहीं कर पाती हूं। अपनी मम्मा कादम्बिनी की बात सुनकर विकास ने प्रतिक्रिया में बस यही कहा कि- मम्मा अभी तो मैं अपने खास दोस्त और सहपाठी साहिल के साथ किसी काम से बाहर स्टेडियम की तरफ जा रहा हूं?। मम्मा आप मुझे माफ़ करना इस वक्त मैं थोड़ा जल्दी में हूं, वो क्या है कि अभी-अभी साहिल का मेरे पास स्टेडियम की ओर जाने के लिए फोन आया था। कल मैं आपको बताऊंगा कि हमें किताबों, स्टेशनरी आइटम्स, बैग, वर्दी आदि का क्या करना है और क्या नहीं। बस मम्मा आज-आज की ही तो बात है।

आज-आज आप थोड़ा-सा सब्र और बनाए रखें। इतने दिनों तक भी तो आप सब्र बनाए हुए थीं। एक और दिन में क्या फर्क पड़ता है मम्मा ?

और ऐसा कहते हुए विकास साहिल के साथ फुर्ती से घर से बाहर स्टेडियम की ओर निकल गया। थोड़ी देर में साहिल और विकास अब स्टेडियम की ओर रास्ते में थे। रास्ते में उन्होंने झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले लोगों को देखा कि किस प्रकार से वे ग़रीबी और कम संसाधनों में अपना जीवन काटने को मजबूर थे। उन्होंने देखा कि उनके बच्चे स्कूल जाने से वंचित थे, क्यों कि उनके पास बच्चों को पढ़ने-पढ़ाने के लिए उतने संसाधन मौजूद नहीं थे। उस दिन विकास मन ही मन सोच रहा था कि वह ऐसे गरीब परिवारों के बच्चों की शिक्षा के लिए अपने जीवन में जितना वह कर सकता है, जरूर करेगा। कुछ काम के बाद, कुछ समय बाद साहिल और विकास दोनों स्टेडियम से अपने-अपने घर लौट आए। अब शाम हो चली थी और विकास जब अपने घर वापस पहुंचा तो उसकी मम्मी कादम्बिनी, उसके पापा सुमित डायनिंग टेबल पर डिनर के लिए उसका इंतजार कर रहे थे।

विकास हाथ-पांव धोकर अब डिनर टेबल पर था। डिनर करते वक्त विकास के डैड सुमित ने विकास से कहा- % बेटा ! कल तुम अपने कमरे को अच्छे से सैट कर लो, अब तुम्हारी छुट्टियां भी हो गई हैं, तुम्हें घर के छोटे छोटे काम में हाथ बंटाकर तुम्हारी मम्मा की सहायता करनी चाहिए और समय का सदुपयोग करना चाहिए। तुम्हारी मम्मा तो सिलाई मशीन पर हमेशा व्यस्त रहती है। बेटा विकास ! तुम्हारी कापी-किताबें अब यूं ही घर में व्यर्थ पड़ी हैं, अब हमारे घर में ये किसी काम की भी नहीं हैं। तुम्हारे कोई छोटा भाई भी नहीं है,जो तुम्हारी किताबों को पढ़ लेगा। अच्छा रहेगा बेटा यदि हम तुम्हारी पुरानी कापी-किताबें किसी कबाड़ वाले को बेचकर तुम्हारे नयी कक्षा में जाने की तैयारी करें।% विकास डिनर ले रहा था और खाना खाते-खाते उसने अपने डैड की बातें सुनकर जैसे हामी में हल्का सा अपने सिर को हिलाया। कादम्बिनी उसकी(विकास) सहमति से जैसे हल्की सी अजीब सी नज़र आ रही थी, हालांकि स्वयं उसने किताबों को कबाड़ में देने की बात कही थी, लेकिन क्या सोचकर यह शायद स्वयं उसे(कादम्बिनी) भी पता नहीं था, लेकिन विकास की हामी भरने पर वह बोली कुछ भी नहीं। सभी ने डिनर ले लिया था और सभी अपने-अपने कमरों में सोने के लिए चले गए। विकास भी अपने बिस्तर पर था। आज उसे नींद नहीं आ रही थी। एक्जाम के दिनों में बहुत नींद आती थी लेकिन आज उसका मन कहीं जैसे भावनाओं में डुबकियां लगा रहा था, वह उनमुना सा था। बिस्तर पर लेटा लेटा आज वह सोच रहा था कि कबाड़ वाले की बजाय यदि वह अपनी किताबों को किसी गरीब बच्चे को दे दें, तो उसका किताबों का खर्च तो कम से कम बच ही जाएगा। यदि कोई गरीब परिवार का बच्चा भी(बारहवीं कक्षा का) नहीं मिलता है तो वह अपनी किताबों को शहर के सार्वजनिक पुस्तकालय में या किसी अनाथालय में देना अधिक पसंद करेगा। विकास यह सोच रहा था कि आज भी इस देश में लाखों ऐसे बच्चे हैं, जिनके पास पढ़ाई के पर्याप्त साधन नहीं हैं।किताबों को लंबे समय तक घर में यूं ही रखे रहने या इन्हें कुछ पैसों के लिए कबाड़ वाले को देने से बेहतर यह है कि वह अपने किसी दोस्त या नजदीकी या किसी गरीब परिवार के बच्चे को इन्हें गिफ्ट/दान कर दे।

विकास यह सोच रहा था कि इससे ना सिर्फ उसकी किताबों का सदुपयोग ही हो पाएगा, बल्कि इससे किसी गरीब बच्चे का भविष्य भी बेहतर हो सकता है। ऐसा सोचते-सोचते न जाने कब विकास को नींद आ गई थी। अगले दिन सुबह-सुबह गली में कबाड़ खरीदने वाला जोर जोर से कबाड़ के लिए टेर पर टेर लगा रहा था। कादम्बिनी ने कबाड़ वाले की टेर सुनकर विकास को आवाज लगाई, जो अभी भी सोया हुआ था। कादम्बिनी ने कहा- बेटा जल्दी उठो, तुम्हारे कमरे का कबाड़ आज साफ नहीं करना क्या ? तुम्हारे पापा ने कल तुम्हें क्या कहा था ? तुम्हें याद है ना। देखो ! बाहर गली में कबाड़ वाला आया है। जल्दी से अपनी किताबों, स्टेशनरी आइटम्स वाले सारे कबाड़ को अपने कमरे से बाहर निकालो। उठो बेटा ! विकास अपनी मम्मा कादम्बिनी की आवाज सुनकर थोड़ी देर बाद अपने कमरे से बाहर आया और उसने अपनी मां से कहा- मां ! ये जो मेरी किताबें हैं ना, ये किसी की जिंदगी और तकदीर दोनों बदल सकतीं हैं। हम महज़ कुछ पैसों के लालच और स्वार्थ के लिए इन्हें कबाड़ वाले को कतई नहीं बेचेंगे। मम्मा ! दरअसल, मैं यह चाहता हूं कि हम इन्हें गरीब परिवार के किसी बच्चे को ये सब दान करें। इससे हमें आत्मिक शांति और खुशी मिलेगी।

कादम्बिनी ने विकास की बातें सुनकर उसे अपने गले से लगा लिया। शायद वह भी यही चाहती थी। भले ही उसने पहले एक दिन अनमने मन से किताबों को कबाड़ वाले को बेचने के लिए विकास को कह दिया था। आज उसकी(कादम्बिनी) आंखों में ख़ुशी के आंसू छलक उठे थे, क्यों कि स्वयं कादम्बिनी का परिवार बहुत बड़ा था। दरअसल कादम्बिनी के पांच बहनें और दो भाई थे, और पिता एक फैक्टरी में काम करते थे। ऐसे में उसके परिवार के सभी बच्चों को पढ़ाने के लिए उसके पिताजी के पास पर्याप्त साधन मौजूद नहीं थे। फैक्ट्री से मिलने वाली तनख्वाह से घर का गुजारा बमुश्किल चलता था।

आज यकायक अपने बेटे विकास के मुख से किताबों को गरीब बच्चे को डोनेट किए जाने की बात सुनकर कादम्बिनी को स्वयं के परिवार के आर्थिक हालात याद आ गये थे कि किस प्रकार से उसके पिताजी ने दान की गई किताबों से ही पूरे परिवार को शिक्षित किया था और केवल शिक्षा के बल पर अपनी पांचों बेटियों की शादी अच्छे घरों में की थी। कादम्बिनी अपने बेटे विकास को बांहों में भरे लगातार यह सोचती चली जा रही थी कि -शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग दुनिया को बदलने के लिए किया जा सकता हैं।

अनुकरणीय

सात वचनों को याद दिलाती एक विवाह पत्रिका

वीरेंद्र व्यास

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

हिंदू सनातन समाज की पत्रिकाओं में गणपति देवता का आवाहन करते हुए भगवान से विवाह कार्यक्रम बिना किसी विघ्न के अच्छी तरह संपन्न हो जाने की कामना की जाती है। वैसे तो हिंदू सनातन समाज में सदियों से विवाह को एक पवित्र एवं सोलह संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। विवाह जैसे मांगलिक कार्य के क्रम में गणेश पूजन, माता पूजन, मेहंदी, हल्दी, महिला संगीत मंडप, वर निकासी, कन्यादान आदि आयोजन होते हैं। हिंदू विवाह पद्धति में परिणय पाणिग्रहण संस्कार का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। और सप्तपदी जिसे सात फेरे भी कहा जाता है का भी बड़ा महत्व होता है।

विवाह संस्कार का यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण होता है जिसमें अग्नि के समक्ष दुल्हा-दुल्हन परिक्रमा करते हैं। सप्तपदी का कार्य अक्सर रात्रि में लग्न होने की वजह से अर्द्ध रात्रि के बाद होते हैं। इस वजह से विवाह में सममिलित अधिकांश लोग भी सप्तपदी के विभिन्न चरणों में पंडित द्वारा उल्लेख किए जाने वाले वचनों की ओर

ध्यान नहीं देते हैं। आधुनिकता, प्रक्रिया पूर्ण करने की जल्दबाजी जैसी तमाम परिस्थितियों के सप्तपदी यानी की सात फेरे विवाह संस्कार की औपचारिकता बनकर रह जाता है। पूरे वैवाहिक दांपत्य जीवन का आधार सात फेरों के पीछे का विशेष संदेश है और महत्वपूर्ण दर्शन समझने में चूक हो जाती है।

चिंतन के इन्हीं चरणों में पिछले दिनों एक परिचित के पुत्र के विवाह का निमंत्रण प्राप्त हुआ। पत्रिका पढ़ कर आश्चर्य मिश्रित सुकून अनुभव हुआ। पत्रिका में शगुन के मधुर पल के रूप में सातों वचनों का क्रम से हिंदी अर्थ सहित उल्लेख किया गया था। इन सात वचनों में उन समस्याओं का समाधान है जिनके कारण पिछले कुछ दशकों से वैवाहिक और दांपत्य में कटुता बढ़ती जा रही है। इन कारणों के कारण परिवारों के टूटने का सिलसिला जारी हक। पति-पत्नी के वैवाहिक एवं दांपत्य जीवन के अधिकांश मामले अब कोर्ट कचहरी की दहलीज तक अधिक जाने लगे हैं। भरण पोषण के मामलों व घरेलू हिंसा के मामलों की देश के विभिन्न अदालतो में एक तरह से बाढसी आ गई है।

पवित्र रिश्ते के पहले वचन से लेकर दूसरे वचन के साहस और खुशी तो तीसरे का सुख और समृद्धि चौथी की जीवन में पवित्रता और पांचवें की ईश्वर प्रसन्न रखें एवं परिवार की वृद्धि और समृद्धि की कामना तथा छठा महत्वपूर्ण कि हम हमेशा एक दूसरे के हृदय को प्रसन्नता और शांति से भरपूर रखेंगे और इससे भी महत्वपूर्ण सातवां हम अपना जीव एक दूसरे कोअर्पित करते हैं इस तरह की भावनाओं एवं संकल्पों के प्रतीक माने जाने वाले इन सप्तपदी के सात वचनों की निश्चित रूप से वैवाहिक एवं दांपत्य जीवन में बहुत ही अहम भूमिका होती है।

इन सप्तपदी के सात वचनों की भावना का महत्व सिर्फ किसी एक विवाह पद्धति तक ही सीमित होना नहीं मान सकते हैं बल्कि यह तो वास्तव में दांपत्य जीवन की सफलता के सूत्रों के रूप में भी इसे लिया जा सकता है। उज्जैन के सिकरवार परिवार द्वारा अपने पुत्र के विवाह पत्रिका में दिए गए सात वचनों का उल्लेख निश्चित ही अनूठा सराहनीय एवं अनुकरणीय प्रतीत होता है। पिछले दिनों समाचार पत्रों में पढ़ा था कि विभिन्न न्यायालय में चलाई जाने वाले लोक अदालत समझौता कार्रवाई के दौरान जो पति-पत्नी संबंधी विवाद भरण पोषण आदि के होते हैं। उनके समझौते के समय छत्तीसगढ़ राज्य के एक न्यायाधीश महोदय द्वारा समझौता की कार्रवाई के बाद पति-पत्नी को सप्तपदी विवाह के सात वचनों की एक तस्वीर अपनी ओर से भेंट की जाती है। ऐसे प्रयासों को देख लगता है कि इन सात वचनों का दांपत्य जीवन में महत्व जान लिया जाए तो परिवारों को विघटन से बचाया जा सकता है।

लघुकथा

रमेश रंजन त्रिपाठी

रसायनशास्त्री

पूरे टूर में बार-बार उसका ध्यान एक बुजुर्ग दंपति मिस्टर एंड मिसेज पिल्लई की ओर जा रहा था। वह और उसके चार मित्र सपरिवार एक बड़े ग्रुप का हिस्सा थे जो केरल के टूर पर था। यूँ तो वह और उसके साथी भी सीनियर सिटीजन थे परंतु उन पति-पत्नी की बात कुछ अलग थी। मिसेज पिल्लई को ज्यादा देर तक चलने-फिरने में तकलीफ होती थी। वे अधिकतर व्हीलचेयर पर रहती थीं। मिस्टर पिल्लई पूरे मनोयोग से उनका ध्यान रखते और व्हीलचेयर को खुद खींचते थे। उन दोनों की केमिस्ट्री देखते बनती थी। मिसेज पिल्लई जब पैदल चल रही होतीं तो पतिदेव उनका हाथ पूरी मजबूती से थामे रहते। जब मिस्टर पिल्लई उनकी सेवा-सुश्रुषा कर रहे होते तब उन दोनों के चेहरे पर उभरनेवाले प्रेम, प्रशंसा, कृतज्ञता, समर्पण के साथ संतुष्टि और आनंद के भाव देखते बनते थे जिन्हें शब्दों में बता पाना आसान काम नहीं।

उसके मन में यह विचार रह-रह कर आ रहा था कि जब मिसेज पिल्लई को चलने-फिरने में इतनी तकलीफ है तो वे ऐसे टूर पर जाती क्यों हैं जिसमें खूब चलना पड़ता है? वे खुद भी तकलीफ उठाती हैं और पतिदेव को भी परेशानी में डालती हैं। इससे अच्छा है, वे घर पर रहें। अन्य जगहों पर वह देखता रहा लेकिन केरल के सबसे बड़े अथिरापल्ली जलप्रपात के पास जाते हुए पिल्लई दंपति को हो रही मुश्किलों को देखकर उसने तय कर लिया कि जब समय मिलेगा वह उनसे बात जरूर करेगा। अथिरापल्ली जलप्रपात में 'बाहुबली' फिल्म के पहले भाग की शूटिंग हुई थी इसलिए उसे देखने का आकर्षण ज्यादा था। इस मशहूर झरने तक पहुंचने के लिए पहाड़ी रास्तों पर काफी चढ़ना और उतरना पड़ रहा था। मिस्टर पिल्लई को व्हीलचेयर पर बैठी मिसेज को ले जाने में बहुत मुश्किल हो रही थी। उसने मिस्टर पिल्लई की मदद कर दी। इससे जान-पहचान बढ़ गई। लौटकर होटल में डिनर के दौरान जब मिस्टर पिल्लई आसपास नहीं थे, उसने मिसेज पिल्लई से पूछा- 'आपको ऐसे सफर में तकलीफ तो बहुत होती होगी?'

'दरअसल मिस्टर पिल्लई को घूमने-फिरने का बहुत शौक है', वे बताने लगीं- 'मेरी हालत यात्रा करने काबिल नहीं है। लेकिन, यह भी सच है कि मुझे छोड़कर ये अकेले कहीं नहीं जाएंगे। मेरी वजह से मिस्टर पिल्लई की ख्वाहिशें अधूरी नहीं रहना चाहिए। यही सोचकर मैं परेशान होने के बावजूद उनके साथ घूमती हूँ।'

इस बात का क्या जवाब हो सकता था, सो उसे भी समझ में नहीं आया कि क्या कहे? हाँ, मौका देखकर उसने अकेले में मिस्टर पिल्लई से कहा- 'आप दोनों की ट्यूनिंग कमाल की है। इतनी तकलीफ के बाद भी आप दोनों खूब एन्जॉय करते हैं।'

वे मुस्कुराए- 'मिसेज को घूमने का बहुत शौक है, लेकिन उनकी हालत इस लायक बची नहीं। मैं उनको घुमाना चाहता हूँ लेकिन अपनी वजह से वे मुझे तकलीफ उठाने नहीं देंगी। इसीलिए मैंने उन्हें अपनी घूमने की हॉबी का विश्वास दिलाने में बहुत मेहनत की और कहा कि उनके बिना मैं कहीं नहीं जाऊंगा। मेरी तमन्ना पूरी करने के लिए वे सारी परेशानियाँ खुशी-खुशी झेल लेती हैं।'

वह विस्मित था। अपने मन में उठ रही भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उसे सही शब्द नहीं मिल रहे थे।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कला, अध्यात्म और प्रकृति के गहरे संबंधों को उजागर करती कृतियां

कला हमें हर परिस्थितियों में सजग रहने, साथ चलने या निर्णय लेने की क्षमता में भी दक्ष बनाती है। कला एक दूसरे को समझने, महसूस करने, उसी में खो जाने या सबसे महत्वपूर्ण बात एकाग्रचित होना सिखाती है। कला अपने आप में समृद्ध है तो प्रकृति भी पूर्णता के काफी नजदीक है जबकि इन सभी के साथ ही आध्यात्म हमें हमारे जीवन से ऊपर उठकर विचार करने को प्रेरित करती है। कलाकार एवं क्युरेटर राजीब सिकदर इन्हीं तीनों महत्वपूर्ण घटकों को एक साथ समाहित करने का प्रयास करते हुए प्रदर्शनी का आयोजन कर रहे हैं जहां देशभर से 35 कलाकारों के कृतियों से एक साथ जुड़ा जा सकता है साथ ही आध्यात्म एवं प्रकृति को कला के माध्यम से देखा, समझा, महसूस किया या साथ में यात्रा किया जा सकता है। कलाकार प्रो. एस. पी. वर्मा अपने कृति में आध्यात्म का सार रचनात्मक रूपों और बनावटों के साथ प्रस्तुत करते हैं जबकि हिना भट्ट के कृति में नीले रंगों के साथ समुद्र और आसमान को दिखाया गया है जहां संकेतों के प्रभाव से आत्मा की अनंत यात्रा भी दर्शित है।

सृष्टि में लोग एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि बिना एक दूसरे के जीवन ही संभव नहीं है। जीवन, प्रकृति, आध्यात्म, कला से ही समाज खुद पर नाज करने की स्थिति में होता है। इन सभी में जितनी सम्पन्नता होगी, जीवन उतना ही सम्पन्न होगा, समाज एवं समाज के अन्य घटक भी उतने ही समृद्धि को प्राप्त कर सकेंगे। कला काल एवं बंधनों से परे की बात है। कला हमें हर परिस्थितियों में सजग रहने, साथ चलने या निर्णय लेने की क्षमता में भी दक्ष बनाती है। कला एक दूसरे को समझने, महसूस करने, उसी में खो जाने या सबसे महत्वपूर्ण बात एकाग्रचित्त होना सिखाती है। कला अपने आप में समृद्ध है तो प्रकृति भी पूर्णता के काफी नजदीक है जबकि इन सभी के साथ ही आध्यात्म हमें हमारे जीवन से ऊपर उठकर विचार करने को प्रेरित करती है। कलाकार एवं क्युरेटर राजीब सिकदर इन्हीं तीनों महत्वपूर्ण घटकों को एक साथ समाहित करने का प्रयास करते हुए प्रदर्शनी का आयोजन कर रहे हैं जहां देशभर से 35 कलाकारों के कृतियों से एक साथ जुड़ा जा सकता है साथ ही आध्यात्म एवं प्रकृति को कला के माध्यम से देखा, समझा, महसूस किया या साथ में यात्रा किया जा सकता है। कलाकार प्रो. एस. पी. वर्मा अपने कृति में आध्यात्म का सार रचनात्मक रूपों और बनावटों के साथ प्रस्तुत करते हैं जबकि हिना भट्ट के कृति में नीले रंगों के साथ समुद्र और आसमान को दिखाया गया है जहां संकेतों के प्रभाव से आत्मा की अनंत यात्रा भी दर्शित है। मनुष्य और प्रकृति के सामंजस्यता को भी दिखाने का प्रयास हुआ है इस कृति में। मेटाफर शीर्षक से जॉयदीप भट्टाचार्य की कलाकृति है जहां पारंपरिक विषयों को संकेतों के माध्यम से आधुनिकता का जामा पहनाते हुए आध्यात्मिक सफर का आनंद है वहीं कलाकार बिप्लब दत्ता के कृति में मानव और उसके स्वभाव के अतिशयवादिता को दर्शाने का प्रयास किया गया है। चटख रंग भयानक और भद्दे स्ट्रोक्स के साथ भी भाव को प्रस्तुत करना दिखता है यहां। सॉमेन कर के कृति में मानव शरीर के बैलेंस को, आजादी के साथ आध्यात्मिक जुड़ाव को आतुर अभिव्यक्ति के रूप में दिखाया गया है जबकि पलाश पॉल रंगो, रेखाओं और रूपों के अतियथार्थ से जूझते हुए प्रस्तुत हुए हैं। संकेतों के माध्यम से रंगों के सम्मोहनीय गुण को भी साध पाने में सफलता हासिल हुई है इनको।

कला और आध्यात्म के गहरे संबंधों के बाबत यदि बात करी जाय तो यह अथाह है। दोनों ही पूर्ण विराम से परे हैं। दोनों के खोज में ही इतनी संभावनाएं हैं कि पूरा का पूरा जीवन सिरा जाए पर खोज अधूरी ही रहे। कला और आध्यात्म के गहरे संबंधों की खोज पर आधारित इस प्रदर्शनी में जितनी भी कृतियों से रूबरू होने का अवसर है सभी के साथ आध्यात्मिक सफर का अपना आनंद है। सभी किसी न किसी विशेष पथ से होते हुए आध्यात्म तक ही पहुंचने के ताक में हैं। इस प्रदर्शनी में सिर्फ बाहरी आडंबर से ही आत्मसात होने की बात नहीं है बल्कि भावों के गहरे सागर में डूबने उतराने की भी उम्मीद है। कलाकार निरंतर इस यात्रा से जूझता हुआ दर्शकों तक पहुंचा है, जहां उसके अपने विचार, टेक्सचर, टेक्निक, और बहुत कुछ उसके अपने साथ थे जिनको समझने हेतु दर्शकों को कृतियों को घंटों निहारने पर मजबूर होना पड़ेगा। प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी चित्र सौंदर्य और महत्व में समृद्ध हैं। जयश्री समीर सावनी अमूर्त अभिव्यक्ति के माध्यम से आध्यात्म को बेचैन आकृतियों को साधने की कोशिश में उनकी काफी पास तक पहुंच दर्शित है। कलाकार नबीन दास के कृति में मानव आकृतियां अपने अतियथार्थवादी वजूद के साथ दिखाई देती है जहां भावों का गहरा हुजूम भी उमड़ता हुआ दिखाई पड़ता है। बिप्लब सरकार की मूर्तियां मानसिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आध्यात्मिक जुड़ाव को प्रेरित नजर आती हैं। प्रस्तुत प्रदर्शनी में उनके द्वारा सृजित कृति में उड़ान, स्वतंत्रता के साथ ही बहुत कुछ को महसूस किया जा सकता है। ध्यान के माध्यम से शांति की अनंत यात्रा देखने हेतु घनश्याम गुप्ता के कृति से जुड़ना होगा जबकि मानवीय भावनाओं और पशुओं के प्रति प्रेम को दर्शाती कलाकृति डॉ. के. वेंकट राव की है। आकांक्षा ठाकुर की उपस्थिति परिदृश्य चित्रकार के रूप में हुई है। घने जंगलों के प्रति आकर्षण रखने वाली कृति में गजब की सम्मोहन शक्ति है। प्रदर्शनी में मानव है, प्रकृति है, इन सभी के साथ आत्मीय उपस्थिति है। भावनाओं या कहें आध्यात्मिक भावनाओं का ज्वार है जिसे कलाकार रंगों, प्रतीकों और कल्पना से सृजित करने का प्रयास करता है। प्रस्तुत प्रदर्शनी में सृजन है जो निरंतर प्रगतिशील मायनों के साथ है। बंगाल के प्रसिद्ध चित्रकार और आर्ट फैमिली इंडिया के सचिव राजिब सिकदर, जो इस प्रदर्शनी के क्यूरेटर भी हैं, कहते हैं कि- इस प्रदर्शनी का उद्देश्य समाज में मानवता के महत्व को उजागर करना है, जो भावनाओं के महत्व के कारण ही संभव है। कला सीधे भावनाओं से जुड़ी होती है, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मनुष्य कला के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति बनाए रखें ताकि समाज और मानवता स्वस्थ बनी रहे। इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले सभी कलाकारों ने अपने-अपने अंदाज में इस भावना को अपनी कृतियों के माध्यम से व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। राजर्षि अधिकारी के कृति में बंगाल स्कूल की भावनाओं के साथ ही भारतीय चित्रकला के सामंजस्यता का भी दर्शन होताहै जबकि कलाकार पूजा राज जिनकी अधिकतर कृतियां ध्यान के बहुत ही नजदीक हैं प्रस्तुत कृति में भी ध्यान के माध्यम से आध्यात्म के दर्शन हैं। महिलाओं के भावनात्मक अभिव्यक्ति को चित्रित करने में माहिर हैं कलाकार संध्या चौधरी पटनायक जबकि शेखर रंजन दत्ता की कृति पौराणिक विषयों पर आधारित है और आध्यात्म के बहाने बहुत ही गूढ़ विषयों पर संवाद को आतुर भी है। कलाकार किशोर कुमार शर्मा बच्चों के भावनाओं को मूर्तियों में उकेरते हैं। रवि प्रकाश सिंह की कृति प्रभाववादी परिदृश्य पर आधारित है और दर्शकों को प्रभावित भी करती है। कलाकार दिनेश कुमार प्रदर्शनी के विषय को बखूबी बयां करते हुए प्रकृति में आध्यात्म को देखते हैं और दर्शकों को वहां तक पहुंचाने का प्रयास भी करते हैं। कलाकार शिल्पा सुराणा की कृति भी पौराणिक विषयों पर आधारित है और प्रभावी भी। राधा-कृष्ण की प्रतिमाओं के माध्यम से कला को व्यक्त करते है बिमल बिन। गोविंद रॉय के कृति में भी प्रकृति है और उसके साथ ही नजदीकी अवयव भी है। कलाकार प्रमोद कुमार सिंह रचनावाद और अमूर्त अभिव्यक्तिवाद को अपने चित्रों में मिश्रित करते हुए आगे बढ़ते हैं। नीले रंग में संकेतों के साथ को दर्शाया गया है यहां। परिदृश्य चित्रकला का एक बढ़िया उदाहरण रबी पाशी के कृति में भी है जबकि विट्ठल मुप्पिडी प्रकृति के रहस्यों को परिदृश्य चित्रों में दिखाते हैं और कृति को दर्शकों के बहुत ही नजदीक लेकर आते हैं। मौमिता मोशन तैरती संरचनाओं को अमूर्त शैली में चित्रित करती हैं। आनंद कुमार के कृति में बनारस के घाटों और प्रकृति का साक्षात दर्शन हैं जबकि फुआद किदवई बाघ के भावनाओं को सफलतापूर्वक चित्रित करते हैं। मनीषा दीक्षित जल रंगों के माध्यम से मानव अभिव्यक्तियों को दर्शाती हैं। डॉ. प्रगति सिंह महिलाओं के भावनाओं को चित्रित करती हैं। दुलाल सरकार अपने कृति में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए समकालीन दुनिया को चित्रित करते हैं। डॉ. श्रीकांत गौड़ बनावटीपूर्ण आकृतियों के माध्यम से मानव भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं जबकि आकाश बिस्वास रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ प्रकृति को देखते हैं। प्रदीप पाल मूर्तियों में मानव भावनाओं को दर्शाते हैं।

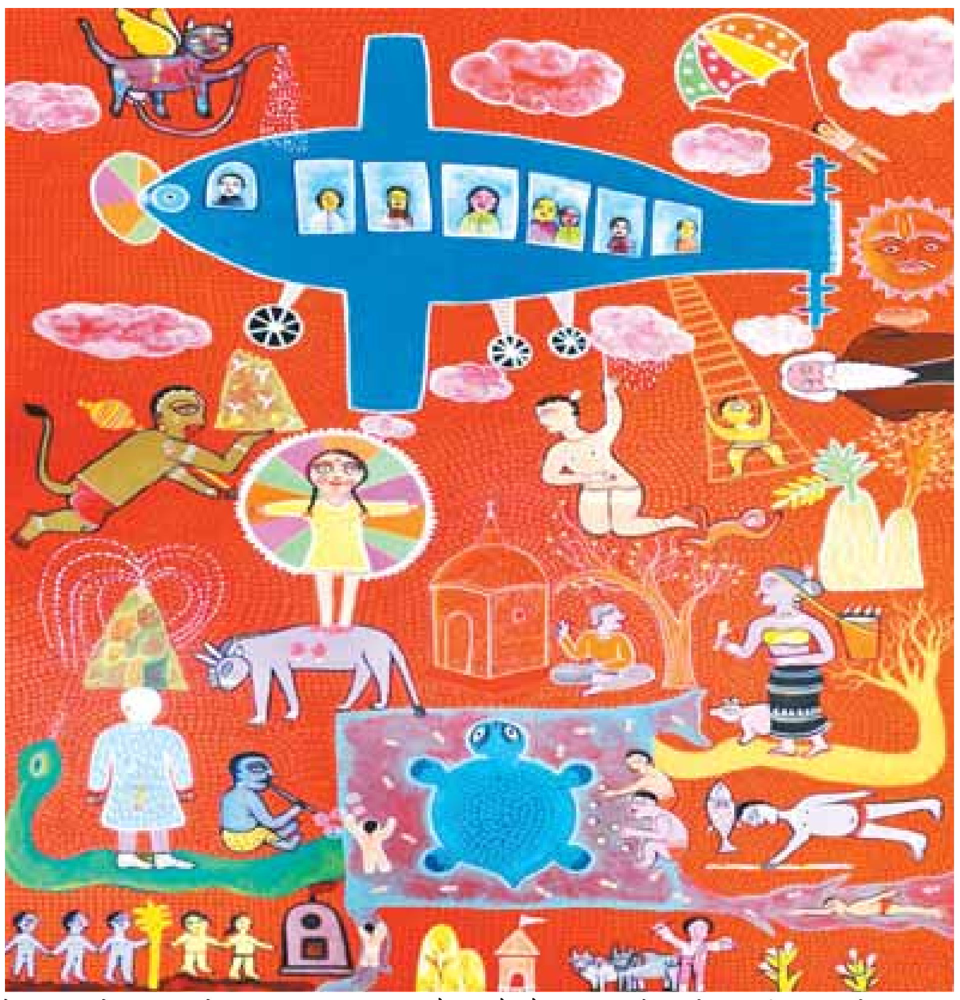

%कला, आध्यात्म और प्रकृति, शीर्षक से कलाकारों का एक मंच पर उपस्थित होना और अपने विचारों एवं रंगों के साथ उपस्थित होना कलाकारों, दर्शकों सभी के लिए एक वरदान साबित होगा। प्रकृति सबसे अमूल्य कृति है जिसका ना तो कोई ओर है और ना ही कोई छोर ठीक इसी प्रकार कला भी सीमाओं से परे की बात हो जाती है और आध्यात्म भी ऐसा ही है ऐसी स्थिति में कलाकारों के सामने तमाम चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हो जाती हैं कि क्या मैं अपने कलाकृति के साथ न्याय कर पाऊंगा? क्या विषय के गहरे तल से अनमोल विचारों के मोती तराश पाऊंगा? क्या दर्शकों तक विषय बोध और सौंदर्य बोध के साथ पहुंच पाऊंगा? ऐसे ही तमाम प्रश्न हैं जिसके निवारण हेतु सभी को इस प्रदर्शनी में जरूर पहुंचना चाहिए और गहरे एवं गूढ़ विचारों युक्त कृतियों से रूबरू होना चाहिए। प्रदर्शनी 7 से 11 दिसंबर तक विजुअल आर्ट गैलरी, इंडिया हैबिटेट सेंटर में चलने वाली है।

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

खामोश रह कर भी... बोलती है!

बेल्जियन फिल्म है- जीन डील्मान 23 कॉमर्स की '1080 ब्रस्सल्स।' डायरेक्टर शैंटेल अकेर्मन की यह फिल्म (1975) पहली नजर में बोरिंग, थकाऊ और कुछ हद तक बिना किसी मकसद की लगती है (फिल्म रिलीज हुई थी तब ऐसा ही कहा गया था) और मुमकिन है कि यह उन्होंने कहा हो, जो लगभग साढ़े तीन घंटे की इस फिल्म के बीच से उठ कर चले गए हों, क्योंकि जो भी अंत तक बैठा, इस अंत को कभी भी नहीं भूल सका। आखिरी के उन सात मिनट में पूरी फिल्म ही नहीं, उस महिला की जिंदगी समझ आ जाती है।

फिल्म की शुरुआत में महिला घर के किचन में काम कर रही है। एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते बिजली का स्विच ऑन-ऑफ करती जाती है। घर करीने से सजा है। पहली नजर में लगता है घर है या हॉटेल, क्योंकि पैसों का भी लेन-देन होता दिखाई देता है, लेकिन रात आते-आते समझ आ जाता है कि यह एक ही दिन का काम है। महिला का घर है और दूसरा किरदार उसका लड़का, लेकिन इस दिन को पूरा होने में घंटे भर का वक्त लगता है।

बेल्जियन फिल्म है- जीन डील्मान 23 कॉमर्स की '1080 ब्रस्सल्स।' डायरेक्टर शैंटेल अकेर्मन की यह फिल्म (1975) पहली नजर में बोरिंग, थकाऊ और कुछ हद तक बिना किसी मकसद की लगती है (फिल्म रिलीज हुई थी तब ऐसा ही कहा गया था) और मुमकिन है कि यह उन्होंने कहा हो, जो लगभग साढ़े तीन घंटे की इस फिल्म के बीच से उठ कर चले गए हों, क्योंकि जो भी अंत तक बैठा, इस अंत को कभी भी नहीं भूल सका। आखिरी के उन सात मिनट में पूरी फिल्म ही नहीं, उस महिला की जिंदगी समझ आ जाती है। जब शैंटेल ने फिल्म बनाई थी, तब केवल चौबीस साल की थीं और कॉन फिल्म फेस्टिवल के डायरेक्टर्स फोरनाइट सेक्शन में शामिल थीं। शुरुआती दौर में भले इस फिल्म को वाहवाही नहीं मिली, लेकिन 2022 में साइट एंड साउंड मैगजीन ने इसे 'ग्रेट फिल्म ऑफ ऑल टाइम' बताया। महिला डायरेक्टर की यह पहली फिल्म है जो इस लिस्ट में शामिल है। साइट और साउंड मैगजीन हर दस साल में फिल्म से यह सवाल करती है और अभी तक इस लिस्ट में चार्ली चैपलिन की बाइसिकल थीव्स , ओर्सन वेल्स की सिटिजन केन, हिचकॉक की वर्टिगो ही अव्वल हैं। फिल्म देखते कई बार डायरेक्टर के लिए वाह निकलती है, जिसने सीन लिखे और संवारा होगा। चौबीस बरस की उम्र में भी शैंटेल ने जिंदगी के उन मसलों को आसानी से परदे पर उतार दिया। फिल्म की कहानी सिर्फ तीन दिन की है और हर दिन लगभग घंटे भर में फैला है। कोई बैकग्राउंड म्यूजिक नहीं, बातचीत के नाम पर घंटे भर में बमुश्किल सम्वाद, लेकिन फिर भी फिल्म बांधे रखती है।

जीन डील्मान (डैफनी सेरिग) की जिंदगी का हिस्सा बन जाते हैं। दूसरे दिन से ही समझ आ जाता है जीन ठीक नहीं है, क्योंकि उसने ढक्कन नहीं लगाया, पर्दा बंद नहीं किया, आलू ज्यादा पक गए, हाथ से सामान गिर रहा है और उसकी बेचैनी-दिमागी हालत बिना शब्द के समझ आ जाती है। जीन डील्मान फिल्म और इसके डायरेक्टर स्लो सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर हैं, जिस पर बैठ कर कुछ देर सुस्ताने और आसपास नजर डालने का सुकून लाजवाब है। घरों में जिंदगी बिता देने वाली महिलाओं पर कविता है फिल्म, मुकम्मल बयान है!

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

नीरज की निर्देशकीय मेधा की अनुभूति कराती फिल्म

बॉलीवुड फिल्मों और कमोबश दक्षिण भारतीय फिल्मों में भी एक क्लाइमेक्स की परिपाटी रही है। फिल्मों की पटकथाओं में तीन क्लाइमेक्स का प्रचलन हॉलीवुड सिनेमा से आया है। नीरज पांडे ने उसी का अनुसरण अपनी नई फिल्म -' सिकन्दर का मुकद्दर ' में बखूबी किया है और कहानी को उपसंहार में तीन बार मोड़ा भी है मगर फिर भी फिल्म अंतिम दृष्य में भी - 'अनन्तिम ' यानी कि प्रोविजनल ही रह जाती है और ऐसा माना जा रहा है कि नीरज पांडे ऐसा करके फिल्म के सीक्वल की गुँजाईश रख रहे हैं ।

नीरज पांडे की निर्देशन यात्रा की यदि हम बात करें तो अय्यारी और औरों में कहां दम था बनाने के बाद उन्होंने ' सिकन्दर का मुकद्दर ' फिल्म बनाई है । नीरज की तीन फिल्मों - 'ए वेडनसडे ' ,' स्पेशल 26 ' और - ' बेबी ' ने निर्देशक के तौर पर तो उन्हें स्थापित किया ही दर्शकों को भी उनका कहने का अन्दाज़ पसन्द आया ।उनकी एक फिल्म - 'एम एस धोनी-अनटोल्ड स्टोरी' जो कमोबेश एक आत्मकथात्मक फिल्म ही थी वो उनके निर्देशकीय प्रभामंडल को एक स्पर्शरेखा के तौर पर ही छू पाई । कमज़ोर निर्देशन के कारण औसत रही इस फिल्म को? नीरज अब भुला देना चाहते हैं । उनके निर्देशन की यह फिल्म भी तमाम खामियों के बीच नीरज की निर्देशकीय मेधा का परिचय देती है ।

दो घण्टे बाईस मिनट की फिल्म की मूल प्रवृत्ति (इंस्टिंक्ट) उनकी फिल्मों को देखने वाले दर्शक वर्ग की सहज प्रवृत्ति के साथ मैच करे, इसका ख्याल नीरज पांडे ने कहीं नहीं रखा है। कहानी 2009 और 2024 की दो अलग अलग समय रेखाओं पर चल रही है। इस एक ख्याल में चरित्रों का इतना ज्यादा ख्याल रखा गया है कि दर्शकों का ख्याल ही ,एकदम ख्याल से उतर गया। बेख्याली में होता है ऐसा कभी कभी! लेकिन, बार बार लगातार ऐसा हो तो इन कहानियों के निर्माता को थोड़ा तो अपने निर्देशक को टोकना चाहिए। फिल्म के जो संवाद इसके ट्रेलर में शानदार लग रहे थे, वे कहानी में फैलकर बिखरने के बाद अपना प्रभाव ही खो देते हैं ।

लेखक -निर्देशक के रुप में नीरज ने दर्शकों को दिमागी तौर पर झकझोरने की कोशिश की है । नीरज की खूबी यही है कि वो फिल्म देखते हुए दर्शकों के पूर्वानुमानों को तोड़ते रहते हैं यानी परदे पर ऐसा कुछ घटित होता है, जिसके बारे में दर्शक सोच भी नहीं पाते या कि जहाँ तक उसकी कल्पना नहीं पहुँच पाती । हाल के सालों में कुछ फिल्मों में परम्परागत क्लाइमेक्स से हटकर ऐसे सीन खूब देखने को मिले हैं। मसलन सिकंदर का मुकद्दर में भी इसका प्रयोग किया गया है. लेकिन दर्शक इसके आशय को कितनी आसानी से समझ पाए हैं, नीरज पांडे को इसका फीडबैक जरूर मिल गया होगा ।।

कहानी पर गौर करें तो दो अन्य चरित्रों कामिनी सिंह (तमन्ना भाटिया) और मंगेश देसाई (राजीव मेहता) के साथ मुख्य चरित्र सिकंदर शर्मा (अविनाश तिवारी) पर 50-60 करोड़ के बेशकीमती हीरों की चोरी का इल्जाम है, तीनों इस आरोप से मुक्त होने की कभी कानूनी तो कभी सामाजिक लड़ाई लड़ते हैं और तमाम दुश्वारियों को झेलते हैं.वहीं दूसरी तरफ मामले की जाँच में जुटे पुलिस अधिकारी जसविंदर सिंह (जिमी शेरगिल) का हंड्रेड परसेंट डिटेक्शन का रिकॉर्ड है, उसे पक्का यकीन है कि करोड़ों के हीरों की चोरी इन्हीं तीनों में से किसी ने की है।न।कोर्ट से केस डिस्मिस हो जाने और नौकरी से बर्खास्तगी के बावजूद वह अपनी जिद पर अड़ा है,उसके भीतर उसकी जिद का जुनून है।जाँच जारी रखते हुए सिकंदर शर्मा को वह हर मोर्चे पर अपनी रडार पर रखता है ।

इस फिल्म के निर्देशन पर कहानी के हावी होने से समीकरण थोड़ा गड़बड़ा गया है । कहानी पहले पुलिस के टॉर्चर को फोकस करती दिखती है लेकिन बाद में तस्वीर बदल जाती है ।

फिल्म में घटनाक्रम और चरित्र-चित्रण पर अधिक से अधिक जोर दिया गया है कलाकारों का अभिनय अच्छा है और कहानी अपने आशय में बताती है कि इंसान की फितरत वक्त की नजाकत के अधीन होती है. मौकापरस्ती और शिखर पर पहुंचने की महत्वाकांक्षा से दूर कोई नहीं। कोई करोड़ों का मालिक बनना चाहता है तो कोई नाम रोशन करना चाहता है. लेकिन इसे फिल्माने में इतनी पेचीदगियां दर्शाई गई हैं कि दर्शक तो उलझते ही हैं यह आशय भी अस्पष्ट सा रह जाता है।

चार साल से नहीं हुआ ठेका, नपा को उठाना पड़ रहा राजस्व का नुकसान

विराम शुल्क और पार्किंग वसूली के लिए नपा को नहीं मिल रहे ठेकेदार

संजय द्विवेदी, बैतूल। नगरपालिका को बस स्टैंड पर वाहनों के विराम शुल्क और पार्किंग जैसी सेवाओं की वसूली के लिए ठेकेदार नहीं मिल रहे है। ठेके की राशि कम करने के बाद भी ठेकेदार दिलचस्पी नहीं दिखा रहे है। इससे नपा को सालाना लाखों रुपये का नुकसान हो रहा है। दरअसल शहर के कोठीबाजार बस स्टैंड पर रुकने वाली बसों से विराम शुल्क और मोटर साइकिल स्टैंड पर वाहनों से पार्किंग शुल्क वसूल करती थी, इसका बकायदा ठेका होता था, लेकिन पिछले चार साल से बस स्टैंड पर वाहन विराम शुल्क एवं पार्किंग जैसी सेवाएं फ्री में संचालित हो रही हैं। नगरपालिका भी कर्मचारी लगाकर वाहन विराम शुल्क की वसूली नहीं करवा पा रही है। इससे नगरपालिका को सालाना 15 लाख रुपए का नुकसान उठाना पड़ रहा है, क्योंकि चार बार ई-टेंडर करने के बाद भी कोई सामने नहीं आया है। बता दे कि बसों से विराम शुल्क के लिए प्रति बस 24 घंटे के हिसाब से शुल्क निर्धारित किया था। वहीं दोपहिया वाहन पार्किंग का टेंडर नहीं होने से वाहन निःशुल्क में पार्क किए जा रहे हैं। जिस कारण नगर पालिका को राजस्व का नुकसान हो रहा है।

ऑफसेट प्राइज घटाने के बाद भी ठेकेदारों की रूचि नहीं: नगरपालिका ने बस स्टैंड पर विराम शुल्क वसूली के लिए ई-निविदा आमंत्रित की थी। लेकिन इसमें किसी प्रतिभागी ने हिस्सा नहीं लिया। नगरपालिका ने वर्ष 2021 को उच्चतम ऑफर दर 21 लाख 50 लाख के साथ ई-निविदा आमंत्रित की गई थी। वर्ष 2023-24 में उच्चतम ऑफर दर 22 लाख रुपए था। नगरपालिका द्वारा निरंतर निविदा आमंत्रित किए जाने के बाद भी प्रतिभागियों ने हिस्सा नहीं लिया। इसके बाद राजस्व के सालाना नुकसान को देखते हुए नगरपालिका ने टेंडर में उच्चतम ऑफर दर (ऑफसेट प्राइज) को घटाकर आधा के करीब यानि ठेका राशि 22 लाख से घटाकर 15 लाख रुपए वार्षिक निर्धारित कर दिया है। इस स्थिति में भी ठेकेदार आगे नहीं आये।

फाइल फोटो

फ्री संचालित हो रही विराम और पार्किंग सेवाएं : नगरपालिका को ठेकेदार नहीं मिलने से बस स्टैंड पर विराम शुल्क और पार्किंग जैसी सेवाएं फ्री में संचालित हो रही है। इधर बस स्टैंड से आय नहीं होने के कारण नगरपालिका भी बस स्टैंड के रखरखाव और अन्य सुविधाओं पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रही है। बस स्टैंड की रंगत भी फीकी पड़ गई है। बस स्टैंड परिसर में मूलभूत सुविधाएं भी यात्रियों को नाममात्र की मिल रही है और खामियाजा आमजनता को चुकाना पड़ रहा है। जानकार बताते है कि इस स्थिति के लिए नगरपालिका स्वयं जिम्मेदार है। नपा द्वारा पूर्व में उच्चतम ऑफर दर में हर साल दस से पंद्रह फीसदी की बढ़ोत्तरी करने के कारण यह स्थिति बनी हुई है। अब ठेकेदार दिलचस्पी नहीं ले रहे।

बस स्टैंड पर दो सैकड़ा से अधिक बसों का आवागमन: बैतूल बस स्टैंड पर प्रतिदिन दो सैकड़ा से अधिक बसों का आवागमन होता है। बसों से नगरपालिका प्रति 24 घंटे के हिसाब से विराम शुल्क वसूली का ठेका देती थी। इसके बस स्टैंड आने वाले वाहनों से भी पार्किंग शुल्क लिया जाता था। बस स्टैंड से ही नगरपालिका को अच्छा खासा राजस्व मिल जाता था, लेकिन पिछले चार साल से विराम शुल्क वसूली और पार्किंग का ठेका नहीं होने से नपा को राजस्व का नुकसान उठाना पड़ रहा है। जानकार कहते है कि वर्तमान में बस स्टैंड की हालत खस्ताहाल हो गई है। रंगरोगन भी खराब हो चुका है। लेकिन नपा ध्यान नहीं दे रही है, जबकि बस स्टैंड शहर की पहचान होती है।

इनका कहना है -

विराम शुल्क और पार्किंग वसूली के लिए ई-निविदाएं आमंत्रित की गई थी, लेकिन प्रतिभागी नहीं आये। जिससे ठेका नहीं हो पाया।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

अग्नि पीड़ितों से मिले क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह

सुबह सवेरे सोहागपुर क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने ग्राम माता में अग्नि पीड़ितों से मिलने पहुंचे। पीड़ितों परिवारों को शासकीय मदद दिलाने का आश्वासन दिया। उल्लेखनीय है कि विगत दिनों ग्राम माछा में तीन मकान में आग लग गई थी ।आज विधायक विजयपालसिंह ने आज ग्राम पहुंचकर उनसे मुलाकात की ।

दो दिन के लिए बैतूल आयेंगे रेलवे डीआरएम

अमृत भारत योजना के निर्माण कार्यो की करेगे निरीक्षण

बैतूल। मध्य रेल नागपुर रेल मंडल के प्रबंधक आज रविवार को बैतूल पहुंचेगे। इस दौरान डीआरएम मनीष अग्रवाल जिले के आमला, घोड़ाडोंगरी और बैतूल रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत चल रहे निर्माण कार्यों की प्रगति का भी अवलोकन करेगे। साथ ही जिले के जन प्रतिनिधियों के साथ बैठक भी करेंगे। वे 9 दिसम्बर को वंदे भारत एक्सप्रेस से लौटते हुए ट्रैक का निरीक्षण भी करेंगे। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि डीआरएम 8 दिसंबर को सडक़ मार्ग से सुबह 11.30 बजे आमला पहुंचेंगे। यहां अमृत भारत स्टेशन योजना के प्रगति देखेंगे। इसके बाद बैतूल, घोड़ाडोंगरी स्टेशन पर चल रहे निर्माण कार्य का निरीक्षण करेंगे। सांसद डीडी उईके के साथ बैठक होगी, जिसमें जिले के अन्य विधायक भी हिस्सा लेंगे। अगले दिन 9 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे वंदे भारत एक्सप्रेस से नागपुर रवाना होते हुए फुट प्लेट इंस्पेक्शन करेंगे। डीआरएम अपने दौरे के दौरान रात्रि विश्राम सारणी के अपर रेस्ट हाउस में करेंगे, जहां उनके ठहरने का इंतजाम किया जा रहा है।

निर्माण स्थल से लोहे की रिंग चुराने वाले आरोपी धराये

- साथी के साथ मिलकर की थी 150 किलोग्राम लोहे की 147 रिंग की चोरी

बैतूल। ग्राम कढ़ाई में कन्या शिक्षा परिसर का निर्माण कार्य किया जा रहा है। निर्माण स्थल से लोहे की चोरी की जा रही थी। जिसकी शिकायत आरएसके कंपनी के सुरक्षा प्रभारी संदीप प्रजापति ने की थी। शिकायत में बताया था कि कंपनी द्वारा ग्राम कढ़ाई में कन्या शिक्षा परिसर का निर्माण कार्य किया जा रहा है। 4 दिसंबर की रात 10 बजे से 5 दिसंबर की सुबह 6 बजे के बीच परिसर से लगभग 150 किलोग्राम लोहे के 147 रिंग, जिनकी अनुमानित कीमत 10 हजार है चोरी हो गए। शिकायत के आधार पर थाना कोतवाली में मामला पंजीबद्ध कर जांच शुरू की गई। फरियादी को शक था कि यह चोरी परिसर में कार्यरत सुरक्षा गार्ड गोपाल बर्डे द्वारा कराई गई है। कोतवाली टीआई रविकांत डहरिया ने बताया कि घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर तत्काल पुलिस टीम का गठन किया गया। संदेही गोपाल बर्डे से पूछताछ की गई, जिसमें उसने अपने साथी धर्मेंद्र बरकड़े के साथ चोरी करना स्वीकार किया। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी किए गए लोहे के रिंग और घटना में इस्तेमाल बोलेरो वाहन को जब्त कर लिया। इस कार्रवाई में निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उप निरीक्षक वहीद खान, अभिजीत, नितिन चौहान, शिवकुमार की भूमिका रही।

केसर बाग में गूंजेगी भागवत कथा की गंगा

- 16 से 22 दिसंबर तक कार्यक्रम, समापन के दिन आयोजित होगा रक्तदान शिविर

बैतूल। आगामी 16 दिसंबर से 22 दिसंबर 2024 तक श्री मद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम केसर बाग, कॉलेज रोड पर आयोजित होगा, जिसमें वृंदावन से पधारे प्रसिद्ध कथावाचक अतुल कृष्ण शास्त्रीजी अपने मुखारविंद से श्रीमद्भागवत कथा का अमृतपान कराएंगे। इस आयोजन का शुभारंभ 16 दिसंबर सोमवार को सुबह 11 बजे कलश यात्रा के साथ होगा। यह यात्रा सलूजा निवास, आनंद वैभव, साहनी सुपरबाजार के पास से शुरू होकर केसर बाग तक जाएगी। कथा वाचन प्रतिदिन दोपहर 1.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक होगा।

अंबेडकर के विचारों को आत्मसात करने का लिया संकल्प

बैतूल। डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर पुलिस परेड ग्राउंड के मॉर्निंग वॉक ग्रुप के सदस्य और नगर पालिका बैतूल के रिटायर्ड सीनियर ऑडिटर बंटी वासनिक के नेतृत्व में उनके साथियों ने संयुक्त रूप से बाबा साहेब के 67वां पुण्यतिथि पर अंबेडकर चौक में स्थित डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के आदमकद मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर महाप्रयाण दिवस मनाया। जानकारी के अनुसार भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के महाप्रयाण दिवस पर आयोजित संक्षिप्त व गरिमामय कार्यक्रम में श्री वासनिक ने बाबा साहेब के सिद्धांतों और आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में बाबा साहेब के सामाजिक न्याय, शिक्षा और समानता जैसे विचारों को जन-जन तक पहुंचाने पर जोर दिया गया। आयोजन में शामिल सभी लोगों ने उनके विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए कार्य करने का वादा किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सिने व्यवसाई अक्षय गोठी, कृष्ण पांसे, समाजसेवी रवि ज्ञानचंदानी, राजेश गौहर और डॉक्टर पंजाब राव सोनारे मौजूद थे।

शौर्य दिवस और बाबासाहेब अंबेडकर की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

बैतूल/भौरा। शौर्य दिवस एवं बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की पुण्यतिथि के अवसर पर भौंरा नगर स्थित मां बिजासन मंदिर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्रीय विधायक गंगा सज्जन उईके ने भी भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता के छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर और दीप प्रज्वलित करके की गई। इसके बाद उपस्थित जनसमूह ने बाबा साहेब अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके योगदान को याद किया। कार्यक्रम में हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन भी किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय लोग शामिल हुए। श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से हनुमान चालीसा का पाठ किया। कार्यक्रम के माध्यम से बाबासाहेब अंबेडकर के विचारों और उनके योगदान को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कहीं योग के साथ मानस पाठ, तो कहीं ध्वज प्रणाम के साथ किया योग

आज निकलेगी वाहन रैली

बैतूल। आगामी 13,14,15 दिसंबर को योग ऋषि स्वामी रामदेव के परम शिष्य और पतंजलि योग समिति के केंद्रीय प्रभारी डॉक्टर स्वामी परमार देव जी की मार्गदर्शन में होने वाले योग आरोग्य शिविर की प्रचार प्रसार हेतु योग समिति के सदस्यों ने शहर की विभिन्न योग कक्षाओं में जाकर योग साधकों को इस योग महाकुंभ में शामिल होने का आमंत्रण दिया। प्रतिदिन ओपन ऑडिटोरियम में संचालित होने वाली योग कक्षा के पश्चात सभी योग साधक अग्रसेन विनायकम इंटरनेशनल स्कूल में योग गुरु रोशनलाल मोखड़े के मार्गदर्शन में संचालित होने वाले योग कक्षा में पहुंच कर वहां योग साधकों के साथ मानस पाठ किया और सभी को तीन दिवसीय योग शिविर में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। योग समिति के सदस्यों ने विवेकानंद वार्ड के ग्रीन सिटी में भी संचालित होने वाली योग कक्षा में साधकों से शिविर में शामिल सम्मिलित होने का आह्वान किया। योग कक्षा में 100 से भी अधिक योग उपस्थित थे। साधकों को विकास वार्ड के पार्षद आनंद प्रजापति, भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी सुनील कुबड़े, आयोजन समिति के सुनील द्विवेदी ने संबोधित किया। सभी साधकों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रार्थना में शामिल होकर ध्वज प्रणाम किया। अंत में आरोग्य काढ़े का वितरण किया गया। कार्यक्रम में ताप्ती दर्शन के संजय शुक्ला, हितेश पटेल, आशीष पचौरी, निमिषा शुक्ला, तरुणा द्विवेदी, तूलिका पचौरी, सरिता रघुवंशी, नीलम दुबे, रामदयाल बोरबन तथा ऑडिटोरियम योग कक्षा के सभी साधक उपस्थित रहे।

वाहन रैली आज--

जन जन तक योग आरोग्य का संदेश पहुंचाने के लिए आज रविवार को दोपहर 1 बजे लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम से वाहन रैली निकल जाएगी जो शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए वापस स्टेडियम में समाप्त होगी। आयोजन समिति ने अधिक से अधिक लोगों से वाहन रैली में शामिल होने की अपील की है।

मोतियाबिंद जांच परामर्श उपचार एवं ऑपरेशन शिविर आज

आमला। युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल चिरायु अस्पताल मेडिकल कॉलेज भोपाल एवं सिविल अस्पताल आमला के सहयोग से विशाल मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं उपचार शिविर का आयोजन आज 8 दिसंबर रविवार को सिविल अस्पताल आमला में दोपहर 12 बजे से 3 तक आयोजित किया जाएगा। आयोजन समिति के संजय साहू प्रकाश साहू महेश साहू ने बताया कि यह शिविर स्व श्री द्वारका प्रसाद साहू, स्व श्री नंदलाल साहू, स्व श्री पूरनलाल साहू की पावन स्मृति में आयोजित किया जा रहा है।

आल इंडिया मुस्लिम त्योहार कमेटी ने बांग्लादेश में हिन्दू नागरिकों पर अत्याचार के विरोध में ज्ञापन सौंपा

सुबह सवेरे सोहागपुर। आल इंडिया मुस्लिम त्योहार कमेटी की सोहागपुर इकाई के नेतृत्व में बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दू भाईयों पर अत्याचार तथा हिन्दू उपासना स्थलों से छेड़-छाड़ करने के विरोध रैली निकालकर राष्टपति को संबोधित करते अनुविभागीय अधिकारी असवनराम चिरामन को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में मुस्लिम त्योहार कमेटी ने लिखा है कि सोहागपुर के मुसलमान समाज के लोग बंगलादेश में हिन्दू भाईयों पर हो रहे अत्याचार एवं हिन्दू उपासना स्थलों से छेड़-छाड़ करने के संबंध में पूरे विश्व से समाचार आ रहे है। इस संबंध में हमारे भारत देश से सभी संगठनों ने अपना विरोध दर्ज करा रहे है।हिन्दू भाईयों पर हो रहे अत्याचार एवं उपासना स्थलों से छेड़-छाड़ करना मानवता की श्रेणी में नहीं आता है। तथा इस्लाम किसी के साथ भी जुल्म करने और उनके उपासना स्थलों की छेड़-छाड़ करने की अनुमति नहीं देता है।

इस्लाम धर्म में इस बात को कठोरता से मना किया हुआ है।ऐसी स्थिति में हम माननीय राष्टपति महोदय से निवेदन करते है। कि आप भारत सरकार के साथ मिलकर बंग्लादेशी हिन्दू भाईयों और उनके पर्वित्र उपासना स्थलों की सुरक्षा हेतु बंगलादेश राजदूतावास एवं सरकार से संपर्क करके बंगलादेशी सरकार को कठोर कदम उठने के लिए निर्देशित करे। सोहागपुर के सभी मुस्लिम समाज के लोग बंग्लादेश में हो रही हिन्दू भाईयों पर हो रहे अत्याचार एवं उपासना स्थलों के छेड़-छाड़ की घटनाओं की कड़ी निन्दा करते है। इस अवसर पर मुस्लिम त्योहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान, वकील हनीफ खान , वरिष्ठ पार्षद जमील खान,हाजी नईम ,हाजी शहीद ,मुस्ताक बाबा ,इलियास खान अबरार खान ,हसीब भाई ,एहसान खान आदाब खान, आरिफ शेख ,मंजूर खान ,अल्ताफ खान ,इसरार खान मुजीब कुरैशी आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर वकील हनीफ खान ने ज्ञापन का वाचन किया।

महिला ने लगाया निगम कर्मचारियों पर धोखाधड़ी का आरोप, 50 हजार रूपये लेकर नहीं दिया मकान

गैर मौजूदगी में घर का सामान बाहर फेंका

देवास। सीमा पति राधेश्याम प्रजापति निवासी चन्द्रशेखर आजाद नगर मेंढकी मल्टी ने संभागायुक्त, आयजी, कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक को शिकायत कर बताया कि अशोक दुबे, मिथलेश दुबे, जसवंत सिंह उर्फ राहुल सेंधव ने नगर निगम के कर्मचारियों के साथ आकर कहा कि आप देवास शहर में चन्द्रशेखर आजाद नगर मेंढकी मल्टीदेवास में कितने समय से किरदार बनकर रहोगें, हम आपको मकान मालिक बनवा देंगे क्योंकि देवास शहर के जनप्रतिनिधियों के द्वारा आपत्ति ली गई है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर गरीब मध्यमवर्गीय लोगों के मकानों पर मालदार लोगों ने गलत तरीके से मकान आवंटित करवाकर खुद ना रहते हुए किरदार छोड़ रखे है, हमें उनका सर्वे कराया जाना चाहिए और उन मध्यम वर्गीय लोगों का हक उन्हें ही देना चाहिए वह मकान उन्ह जरूरतमन्द गरीब लोगों को ही आवंटित कर दिया जाएगा यह बात बोलकर आवास आवंटन के नाम पर मुझे से अशोक दुबे ने पचास हजार रूपये की मांग की। उक्त राशी अशोक दुबे ने अपने दो साथी मिथलेश दुबे ओर जसवंत सिंह उर्फ राहुल सेंधव, के द्वारा मुझ से राशि पचास हजार रुपए लिए गए जो मेंने मेरे भैया विरेन्द्र के फोन से आनलाईन फोन पे पर दिए । फिर उसके बाद मुझे चन्द्रसेखर आजाद नगर मेंढकी मल्टी में भवन क्रमांक के.जी.08 का ताला खोलकर मेरे हाथ में चाबी देते हुए फोटो खीचकर ले गये और बोले आप अपना सामान रख कर निवास करो और आपको 1 माह में लेटर बनकर भवन आवंटित हो जायेगा।

इसके बाद भी आवंटन पत्र मांगने पर हर बार आज कल का कह कर आश्वासन देते रहे। इस प्रकार 18 माह से ऊपर बीत चुके है पर मुझे आवंटन पत्र नहीं मिला है। मेरे द्वारा कलेक्टर जिला देवास को और मुख्यमंत्री व अन्य सम्बंधित विभाग मे नगर निगम कर्मचारियों की शिकायत की गई थी। देवास कलेक्टर द्वारा दोषियों पर उचित प्रकरण दर्ज करने को कहा गया था। उसके बाद अशोक दुबे और अन्य साथियों द्वारा मुझे शिकायत वापस लेने का दबाव बनाया तो मेने कहा कि आपने मुझ से जो मकान आवंटित करने का कहा था लेकिन आज दिनांक तक आवंटन पत्र नहीं दिया। नगर निगम के कर्मचारियों ने मेरे साथ षंडयत्र पुर्वक साजिश रचकर राष्ट्रीय त्यौहारों के अवकाशों के मौके का फायदा उठाकर आसपास के लोगों से मेरी झुठी और गलत आचरण की गलत शिकायतें करके और व्यवहार गलत बताकर मेरे घर का समान मेरी गेर मोजुदगी में घर से बाहर रोड़ पर फेंक दिया और मुझे घर से बेघर कर दिया में बेघर हो गई हूं। इनके द्वारा कहा कि कोई भी इस महिला का साथ देगा वो भी जेल जाएगा और शासकीय कार्य में बाधा का केस दर्ज किया जाएगा। इस तरह इन नगर निगम के कर्मचारियों ने कितने लोगों के साथ किया होगा वो लोग इनकी शिकायत इस डर से नहीं कर पाते हैं। पूर्व मे भी एक निगम कर्मचारी की शिकयत किसी भागीरथ नामक व्यक्ति ने की थी जिसकी खबर अखबार पेपर मे प्रकाशित हो चुकी है और आए दिन एसी घटनाएं घटित होती रहती है। सीमा प्रजापति ने मांग की है कि इस मामले की जांच कर दोषीयो पर उचित करवाई कर मुझे प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत चन्द्रशेखर आजाद नगर मेंढकी मल्टी देवास मे मकान आवंटित करवाकर न्याय प्रदान करे और ऐसे लोगों पर उचित से उचित करवाई करे अन्यथा यह लोग कितने गरीब और कमजोर लोगों के साथ ऐसी धौखाधडी कर पुलिस प्रशासन को गुमराह करके बेकसूर लोगों पर झुठे प्रकरण दर्ज करके उनको घर से बेघर कर दिया।

थाना औद्योगिक क्षेत्र पुलिस ने सड़क पर हंगामा कर रहे हुड़दंगियों को गिरफ्तार कर भेजा जेल, अलग अलग स्थानों पर कर रहे थे हंगामा।

देवास। पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोद के द्वारा शहर में शांति व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करने और अशांति फैलाने वालों के खिलाफ लगातार सख्त कार्यवाही की जा रही है । इसी कडी में आज अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) श्री जयवीर सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में एवं नगर पुलिस अधीक्षक देवास श्री दीशेष अग्रवाल के निर्देशन में थाना प्रभारी औद्योगिक क्षेत्र श्री शशिकांत चौरसिया के नेतृत्व में थाना क्षेत्र अन्तर्गत नियमित रूप से गश्त और सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए 06-07 दिसंबर 2024 को पुलिस गश्ती दल ने अलग-अलग चौराहों पर हंगामा और गाली-गलौज कर शांति भंग कर रहे हुड़दंगियों के विरूद्ध धारा 170 बीएनएसएस के तहत गिरफ्तार कर माननीय एसडीएम न्यायालय देवास के समक्ष पेश कर जेल भेजा गया ।

गिरफ्तार आरोपी

1.रोमी रेकवाल पिता मोहन रेकवाल उम्र 28 वर्ष निवासी प्रहलाद नगर बावडिया ।
2.सतीश चौहान पिता परमानंद चौहान उम्र 35 वर्ष निवासी ढांचा भवन देवास ।
3.रोहित मालवीय पिता माखनलाल मालवीय उम्र 21 वर्ष निवासी गांधी चौक बावडिया ।
4.मनोज जाटव पिता खुशी जाटव उम्र 35 वर्ष निवासी तेजाजी नगर खंडवा नाका इंदौर ।
5.पंकज पिता ओमप्रकाश निरत निवासी प्रेमनगर पार्ट-01 देवास ।
6.आशुतोष पिता उमेश पटेल उम्र 18 वर्ष निवासी नागदा देवास ।
7.आयुष पिता निलेश पटेल उम्र 20 वर्ष निवासी नागदा देवास ।

सराहनीय योगदान- उक्त सराहनीय कार्य में थाना प्रभारी श्री शशिकांत चौरसिया,उनि विजय सोनी,सउनि शंकर गवली,प्रआर नरसिंह दामा,जितेंद्र चौधरी,राहुल राणा एवं आर श्याम मालवीय की सराहनीय भूमिका रही।

कपिल शर्मा से बोर हो गए दर्शक

कपिल शर्मा का नेटफ्लिक्स पर आने वाले शो 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' के साथ दर्शकों का मनोरंजन ठीक से नहीं कर पा रहा। पहले सीजन के बाद उन्होंने दूसरे सीजन के साथ दर्शकों का मनोरंजन किया, लेकिन अब उनके प्रशंसकों के लिए परेशान करने वाली खबर है। शो का दूसरा सीजन जल्द ही खत्म होने वाला है। ऐसे में उम्मीद थी कि इसके तीसरे सीजन के लिए खास तैयारियां की जाएंगी, लेकिन अब खबर है कि यह शो तीसरे सीजन के साथ नहीं लौटेगा।

ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स अब 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' को आगे जारी रखने के मूड में नहीं है। नेटफ्लिक्स ने दर्शकों की संख्या में भारी गिरावट और वित्तीय घाटे के कारण 'द कपिल शर्मा' शो को फिर शुरू न करने का फैसला किया। शो की टीआरपी में 40 प्रतिशत तक की गिरावट आई है, 90 प्रतिशत नेटफ्लिक्स उपयोगकर्ता आधा एपिसोड भी नहीं देख पाए। शो की अधिकांश सामग्री यूट्यूब पर उपलब्ध है, जिससे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर इसकी अपील और कम हो गई।

दोहराव वाला फॉर्मेट, रिश्तों और शादियों पर पुराने चुटकुले और कंटेंट में नए पन की कमी ने दर्शकों को बोर कर दिया। कहा जा रहा है कि शो ने नेटफ्लिक्स को 80-90 करोड़ रुपए का नुकसान पहुंचाया, जो इसे वित्तीय रूप से कमजोर बनाता है। कॉमेडी की दुनिया में कभी राज करने वाले कपिल शर्मा शो की चमक फीकी पड़ गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, नेटफ्लिक्स ने शो को रिन्यू न करने का फैसला किया, क्योंकि दर्शकों की संख्या में काफी गिरावट आई है और दर्शक इससे संतुष्ट नहीं हैं।

हालांकि, यह शो लंबे समय से कई लोगों के पसंदीदा में से एक था, लेकिन शो के हालिया प्रदर्शन ने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के लिए इसे जारी रखना असंभव बना दिया है। हाल ही में आई रिपोर्ट्स के अनुसार, कपिल शर्मा के शो की टीआरपी (टेलीविजन रेटिंग पॉइंट्स) में भारी गिरावट आई है। यह भारी गिरावट दर्शाती है कि कम लोग

इस शो को देख रहे हैं, जो लंबे समय से भारत के शीर्ष कॉमेडी कार्यक्रमों में से एक रहा है।

इसके अलावा, नेटफ्लिक्स के आंकड़ों से पता चलता है कि लगभग 90 प्रतिशत यूजर्स किसी शो का आधा हिस्सा भी नहीं देखते। ऐसे शो के लिए ऐसा जुड़ाव स्तर कम है, जिसके निर्माण और विपणन के मामले में बहुत अधिक निवेश की आवश्यकता होती है। इस मामले में इतने कम दर्शकों वाले शो पर लगातार खर्च करना प्लेटफॉर्म के लिए सही नहीं है। नेटफ्लिक्स पर शो के असफल होने का एक प्रमुख कारण यह है कि यह यूट्यूब पर आसानी से उपलब्ध है, जहां इसकी सबसे अच्छी सामग्री साझा की जाती है।

शो के क्लिप और हाइलाइट्स को प्लेटफॉर्म पर बड़े पैमाने पर शेयर किया जाता है, जिससे लाखों व्यूज मिलते हैं। कुछ दर्शकों के लिए ये छोटी क्लिप उनका मनोरंजन करने के लिए पर्याप्त हैं और उन्हें नेटफ्लिक्स पर पूरे एपिसोड देखने की जरूरत नहीं है। इस तरीके ने नेटफ्लिक्स पर दर्शकों को आकर्षित करने की शो की क्षमता को काफी प्रभावित किया है, क्योंकि अब दर्शक पूरे एपिसोड को देखने के लिए सदस्यता के लिए भुगतान करने के बजाय मुफ्त में सर्वोत्तम क्षणों का आनंद लेना पसंद करते हैं।

ऐश्वर्या के 'वॉलपेपर' ने ध्यान क्यों खींचा

ऐश्वर्या राय इन दिनों लाइमलाइट बटोर रही हैं। दावा है कि ऐश्वर्या और अभिषेक बच्चन के बीच कुछ भी ठीक नहीं चल रहा। इस वजह से अब दोनों तलाक लेने वाले हैं। कपल की तलाक की अफवाह लगातार सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं, जिसमें अमिताभ बच्चन अपने ब्लॉग के जरिए गलत बता चुके हैं। लेकिन, फिर भी कुछ न कुछ अपडेट आता रहता है। इन सबके बीच, अब ऐश्वर्या राय का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें लोगों का ध्यान ऐश्वर्या के मोबाइल वॉलपेपर ने खींचा है।

हाल ही में ऐश्वर्या राय दुबई में आयोजित हुए एक इवेंट में शामिल हुई, जिसमें ऐश्वर्या के लुक ने हर किसी को इंप्रेस किया। इस इवेंट में हिस्सा लेकर एक्ट्रेस मुंबई लौट आईं। उन्हें बीते दिन ही मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया। इस मौके पर ऐश्वर्या के लुक की तरह उनके फोन ने भी लोगों का ध्यान खींच लिया। ऑल ब्लैक आउटफिट में ऐश्वर्या राय काफी सुंदर लगी। लेकिन, उनके

वॉलपेपर ने फैंस को खुश कर दिया। विरल भयानी ने ऐश्वर्या का एयरपोर्ट लुक में एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वह एयरपोर्ट से निकलकर अपनी कार में बैठती नजर आ रही हैं।

इस वीडियो में देखा जा सकता है कि एक्ट्रेस ने अपने हाथ में मोबाइल पकड़ा है, जिसका वॉलपेपर काफी हद तक नजर आ रहा है। माना जा रहा है कि ऐश्वर्या राय के वॉलपेपर पर ससुर अमिताभ बच्चन और आराध्या की फोटो लगी है। हालांकि, इस फोटो में चेहरा साफ नजर नहीं आ रहा। इस वजह से कुछ फैंस कंफ्यूज भी है। ऐश्वर्या राय और अभिषेक बच्चन के तलाक की अफवाह इस एक वॉलपेपर से कम हो गई। बीते दिन एयरपोर्ट पर ऐश्वर्या राय को लेने भी अभिषेक बच्चन की कार आई थी, जिस वजह से अब फैंस मान बैठे हैं कि ऐश्वर्या और अभिषेक तलाक नहीं ले रहे हैं। दोनों के बीच सब कुछ ठीक हैं। वे बस अपने प्राइवेट मुद्दे पर बोलना नहीं चाहते हैं।

रियल बॉक्स

उम्र के साथ बड़ा नहीं हुआ बच्चों का सिनेमा!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों की कहानियां अलग-अलग होती है, ये सब जानते हैं और यह होना जरूरी भी है। लेकिन, ये बात कम ही लोग जानते होंगे कि फिल्मों का अपना ट्रेंड भी होता है। जब कोई फिल्म दर्शकों की पसंद पर खरी उतरती है, तो आने वाली कई फिल्मों के कथानक भी उसी फिल्म के आसपास रचे जाते हैं। जब बदले की भावना वाली फ़िल्में हिट हुई, तो ऐसी फिल्मों की लाइन लग गई। यही स्थिति प्रेम कहानियों को लेकर भी देखी गई। लेकिन, बच्चों की फिल्मों को लेकर ये स्थिति कभी नहीं बनी। सौ साल से ज्यादा लंबे फिल्म इतिहास को टटोला जाए, तो बच्चों पर बनी फिल्मों की संख्या बहुत कम मिलेगी। अमूमन साल भर में एक फिल्म भी ऐसी नहीं बनती, जिसका कथानक बच्चों पर केंद्रित होता हो! इसका सीधा सा कारण है फिल्मों की कमाई। फ़िल्मकार निर्माण लागत से कई गुना ज्यादा कमाने की कोशिश करते हैं। पर, कमाई का ये फार्मूला बच्चों की फिल्मों पर सही नहीं बैठता।

यही वजह है कि फिल्मों के कथानक में बच्चों से जुड़े प्रसंग तो होते हैं, पर पूरी फिल्म बच्चों के लिए नहीं होती। इस नजरिए से कहा जा सकता है कि हिंदी फिल्मों की उम्र सौ साल लांघ गई, पर बच्चों का सिनेमा अभी खुद ही बच्चा है। क्योंकि, बाल फिल्मों से आशय है, ऐसी फिल्में जो बच्चों का उनकी मानसिकता के स्तर पर मनोरंजन करें। साथ ही उनसे जुड़ी समस्याओं की तरफ भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित करे! लेकिन, हिंदी फिल्मों में उपदेशात्मक बाल सिनेमा की बाढ़ है। अभी तक बनी ज्यादातर फिल्मों में बच्चों को उपदेश देते हुए कथानक रचा गया। निर्देशक की कोशिश रहती हैं, कि बच्चा वह उपदेश सुने। सिनेमा के शुरुआती सालों में दादा साहब फाल्के ने शायद ही भागवत पुराण का कोई कैरेक्टर अपनी बनाई फिल्मों में छोड़ा हो। आज हमारे यहां बाल सिनेमा के साथ भी स्थिति वही है। गणेश, हनुमान, घटोत्कच्च और भीम जैसे मिथकीय चरित्रों से बच्चों को उपदेश देने का काम किया जा रहा है। कार्टून फ़िल्में भी इन्हीं कथानकों पर बन रही है। लेकिन, यह भी कहीं न कहीं बच्चों पर थोपा गया संदेश ही है।

आज़ादी के बाद लगभग हर दशक में सिनेमा के जरिए ये कोशिश की जाती रही, कि समाज को कुछ नया दिया जाए। इस कोशिश में बच्चों पर केंद्रित सिनेमा की शुरुआत हुई। इसका मकसद था बच्चों से जुड़े मुद्दे, उनकी सामाजिक चुनौतियां और उनके अंतर्मन की स्थिति को परदे पर दिखाना। लेकिन, अभी तक इस दिशा में कारगर काम नहीं हुआ! बच्चों पर अभी तक जो भी फिल्में बनी, उनमें सिर्फ संदेश दिए जाते रहे! हिंदी सिनेमा में ज्ञान देने वाली ऐसी फिल्मों की भरमार है। अधिकांश बाल फिल्मों की कहानी में उपदेश ही ज्यादा दिखाई दिए, बालमन को कुरेदने की कोशिश किसी ने कभी नहीं की! बच्चों के लिए सत्यजित राय ने कुछ अच्छी बंगाली फिल्में बनाने की कोशिश जरूर की थी। लेकिन, ताजा संदर्भों में देखा जाए तो किसी ने वास्तव में बालमन को खंगालकर फ़िल्में बनाने की कोशिश की है, तो वे हैं गुलजार! उनकी फिल्म 'परिचय' (1972) और 'किताब' (1977) में बच्चों का सकारात्मक चित्रण दिखाया गया। 'परिचय' ऐसे परिवार के बच्चों की कहानी है, जहां बच्चों की मनः स्थिति को जांचा-परखा नहीं गया था। क्योंकि, जब तक बच्चों से घुला-मिला नहीं जाए, उनके करीब नहीं जाया जा सकता। ऐसा न करने पर खुद परिवार के सदस्य उन्हें समझ पाने में असमर्थ होते हैं। फिल्म में दिखाया था कि बच्चों का मनोविज्ञान समझे बगैर उन्हें समझना मुश्किल है। ऐसी स्थिति में उनका टीचर रवि (जितेंद्र) बच्चों के हाव-भाव और उनकी जरूरतों को समझकर उन्हें पढ़ा पाने में सफल होता है। जबकि, इसके पूर्व कई शिक्षक बच्चे भगा देते हैं।

महबूब खान ने भी बच्चों के लिए 1962 में 'सन ऑफ इंडिया' बनाई थी। फिल्म तो नहीं चली, पर इसका एक गीत 'नन्हा मुन्ना राही हूं मैं देश का सिपाही हूँ' को लोग आज भी याद करते हैं। सत्येन बोस के निर्देशन में 1964 में बनी फिल्म 'दोस्ती' सिर्फ बच्चों की फिल्म तो नहीं कहा जा सकता, पर ये फिल्म बच्चों को प्रेरणा

जरूर देती है। शेखर कपूर ने भी 1983 में 'मासूम' बनाई! वास्तव में तो ये विवाहेत्तर संबंधों से जन्मे बच्चे के कारण होने वाले पारिवारिक संघर्ष पर आधारित थी। 1992 में गोपी देसाई निर्देशित फिल्म 'मुझसे दोस्ती करोगे' का विषय भी एक बच्चे के सपनों की दुनिया का चित्रण था। इसी थीम पर 1994 में अन्नू कपूर ने 'अभय' बनाई थी। आशय यह कि बच्चों पर फ़िल्में तो बनी, पर उसमें भी बड़ी उम्र के दर्शकों को ध्यान में रखा गया! फिल्म 'नन्हें मुन्ने' भी याद करने लायक फिल्म है, जिसमें एक लड़की के अनाथ होने के बाद अपने तीन भाइयों के पालन पोषण के संघर्ष का चित्रण था! ऐसी ही एक फिल्म 'मुन्ना' थी, जो ऐसे बच्चे की कहानी है, जिसकी विधवा मां ख़ुदकुशी कर लेती है। बाद में चेतन आनंद ने इसी को आधार बनाकर 'आखिरी खत' फिल्म बनाई थी।

बच्चों पर केंद्रित एक फिल्म 'जागृति' (1954) भी आई, जिसका गीत 'हम लाए हैं तूफान से किश्ती निकाल के' आज भी सुनाई देता है। इसी साल बनी फिल्म 'बूट पॉलिश' भी बाल मनोविज्ञान को स्पष्ट करती है। एक सन्यासी और एक अनाथ बालिका के बीच स्नेह संबंध दर्शाने वाली वी शांताराम की फिल्म 'तूफ़ान और दीया' (1956) भी सराहनीय फिल्म थी! सत्येन बोस ने 1960 में बच्चों पर केंद्रित फिल्म 'मासूम' बनाई, जिसमें बच्चों से जुड़े कई सवाल उठाए थे। इस फिल्म का गीत 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए' अभी भी सुना जाता है। 1983 में शेखर कपूर ने इसी नाम से फिर फिल्म बनाई। यह फिल्म भी बच्चों को कहानी का आधार बनाकर बनी थी। अभी तक बच्चों पर कई फ़िल्में बनी, पर वास्तव में इन फिल्मों को बच्चों की फिल्म नहीं कहा जा सकता! बतौर बाल कलाकार नीतू सिंह की फिल्म 'दो कलियां' को बच्चों की फिल्म जरूर कहा गया, पर ये बच्चों के लिए नहीं थी!

2005 में विशाल भारद्वाज ने भी बच्चों के लिए 'ब्लू अम्ब्रेला' बनाई, पर वो चली नहीं! बीआर चोपड़ा' ने संयुक्त परिवारों के टूटने पर भूतनाथ' और 'भूतनाथ रिटर्न' बनाई! लेकिन, विशाल भारद्वाज की 'मकड़ी' ने बाल फिल्मों को लेकर चली आ रही धारणा को तोड़ दिया! 2007 में आमिर खान ने बाल मानसिकता पर श्रेष्ठ फिल्म 'तारे जमीं पर' बनाकर दर्शकों को जरूर झकझोर दिया था। परिवार में उपेक्षित और मंदबुद्धि बच्चे की कहानी ने कई बड़ों-बड़ों को रुलाया था। अमोल गुप्ते की फिल्म 'स्टेनली का डब्बा' (2011) को भी बच्चों को बेहतरीन फिल्म कहा जा सकता है! गरीब राजस्थानी लड़के के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम से मिलने की कोशिश पर बनी 'आई एम कलाम' भी इस दिशा में अच्छा प्रयास था। लेकिन, 1956 में अल्बर्ट लैमोरीसे निर्देशित फ्रेंच फिल्म 'रेड बैलून' और 1995 में ईरानी फ़िल्मकार निर्देशित 'व्हाइट बैलून' आज भी सिनेमा के लिए मील का पत्थर है। लेकिन, क्या कारण है कि हम बच्चों के लिए अभी तक 'चिंड्रेन ऑफ हेवन' जैसी एक भी फिल्म नहीं बना पाए!

आज फिल्में हमारी जरूरत का हिस्सा बन चुकी हैं। आज़ादी के बाद लगभग हर दशक में सिनेमा के जरिए कोशिश की जाती रही, कि समाज को कुछ नया दिया जा सके। इस क्रम में बच्चों पर केंद्रित सिनेमा की शुरुआत हुई। जिससे बच्चों के अपने मुद्दे, उनसे जुड़ी सामाजिक चुनौतियाँ और उनके अंतःमन स्थिति को परदे पर दिखाया जा सके। 1955 में बच्चों के लिए उद्देश्यपूर्ण फिल्मों का निर्माण और उन्हे स्वस्थ मनोरंजन देने के लिए 'बाल चलचित्र समिति' की स्थापना की गई। इस समिति का काम बच्चों पर आधारित फिल्मों का निर्माण, वितरण और प्रदर्शन करना था। इस कोशिश में 1979 से यह समिति हर दो साल में 'बाल फिल्म महोत्सव' का आयोजन करती आ रही है। जिनमें देश और दुनिया के बच्चों पर केन्द्रित फिल्मों का प्रदर्शन होता है। लेकिन, आज तक बाल चित्र समिति एक भी ऐसी फिल्म नहीं बना पाया, जिससे बाल सिनेमा का इतिहास गौरवान्वित हो सके। आजादी के बाद से बच्चों पर जितनी फिल्में बनाई, उनमें बच्चों को साथ लेकर चलने के बजाए संदेश ज्यादा सुनाए गए।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

खत्म नहीं हुआ ग्रेटेस्ट शौमेन का शो

अशोक जोशी

राज कपूर 14 दिसंबर 1924 में पैदा हुए थे और साल 1988 में उनका निधन हो गया था। भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े फिल्ममेकर्स में से एक रहे इस शख्स ने विश्व सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। 'द ग्रेटेस्ट शोमैन' के नाम से

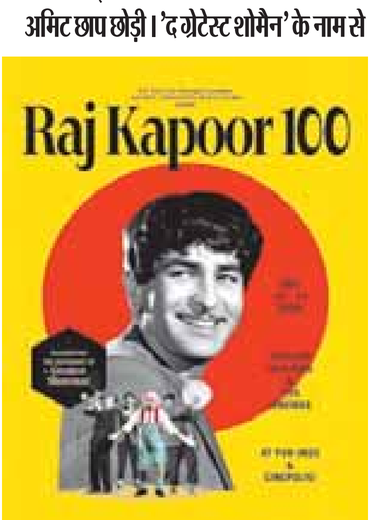

मशहूर राज कपूर ने फिल्म मेकिंग, एक्टिंग और डायरेक्शन में ऐसा जबरदस्त काम किया, जो आज भी प्रेरणा देता है। उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर आरके फिल्म्स, फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन और एनएफडीसी ने एक साथ मिलकर एक खास उत्सव मना रहे हैं। जिनमें उनकी 10 फ़िल्में प्रदर्शित की जाएगी।

हिंदी जिन लोगों को लगता था कि 2 जून 1988 के बाद हिंदी फिल्मों के ग्रेटेस्ट शोमैन राज कपूर का शो थम जाएगा, वह गलत थे। आज यदि राज कपूर जिंदा होते तो देखते किस तरह से फिल्म प्रशंसक 14 दिसम्बर को उनकी सौंवी जयंती मना रहे हैं। 'मेरा नाम जोकर' में उन्होंने सच कहा था 'कल खेल में हम हो न हो गर्दिश में सितारे रहेंगे सदा' और जाइएगा नहीं शो अभी खत्म नहीं हुआ। वाकई अब तो ऐसा लगने लगा है कि राज कपूर ने खेल खेल ही में ही, लेकिन सच ही कहा था कि शो अभी खत्म नहीं हुआ। क्योंकि, अगले सप्ताह मनाई जाने वाली उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर आरके फिल्म्स, फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन और एनएफडीसी ने एक साथ मिलकर एक खास उत्सव मना रहे हैं।

इसमें 40 शहरों के 135 सिनेमाघरों में राज कपूर की 10 फिल्में प्रदर्शित की जाएंगी। 'राज कपूर 100 ~ सेलिब्रेटिंग द सेंटेनरी ऑफ द ग्रेटेस्ट शोमैन' नाम का यह उत्सव 13 दिसंबर को शुरू होगा और 15 दिसंबर तक चलेगा। इस दौरान राज कपूर की फिल्मों की स्क्रीनिंग पीवीआर-आईनॉक्स और सिनेपोलिस सिनेमाघरों में आग, बरसात, आवारा, श्री 420, जागते रहो, जिस देश में गंगा बहती है, संगम, मेरा नाम जोकर, बॉबी और 'राम तेरी गंगा मैली' का प्रदर्शन किया जाएगा। खास बात यह है कि हर सिनेमाघर में टिकट की कीमत मात्र 100 रुपये रखी गई है, ताकि हर कोई इस शताब्दी समारोह का हिस्सा बन सके।

इस बारे में उनके बेटे रणधीर कपूर ने कहा कि राज कपूर सिर्फ एक फिल्ममेकर नहीं वे दूरदर्शी थे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा की भावनात्मक परंपरा को आकार दिया। उनकी कहानियां केवल फिल्में नहीं, बल्कि भावनात्मक यात्राएं हैं, जो पीढ़ियों को जोड़ती हैं। यह उत्सव उनके नजरिए को हमारी छोटी सी श्रद्धांजलि है। वहीं, पोते रणबीर कपूर ने कहा कि हमें बहुत गर्व है कि हम राज कपूर परिवार के सदस्य हैं। हमारी पीढ़ी एक ऐसे दिग्गज के कंधों पर खड़ी है, जिनकी फिल्मों ने अपने समय की भावनाओं को दर्शाया और दशकों तक आम आदमी को आवाज दी। उनकी टाइमलेस कहानियां प्रेरणा देती रहती हैं, और यह फेस्टिवल उस जादू का सम्मान करने और सभी को बड़े पर्दे पर उनकी विरासत का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करने का हमारा एक तरीका है।

एक निर्देशक, निर्माता और कलाकार के रूप में, राज कपूर भारतीय स्वतंत्रता के बाद के पहले दो दशकों में भारतीय सिनेमा के तथाकथित 'स्वर्ण युग' के दौरान भारत के अग्रणी फिल्म निर्माताओं में से एक बन गए। राज कपूर यथार्थ में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। उनकी फिल्मों में सिक्के के दो पहलू दिखाए गए। जिसका एक पहलू स्वतंत्रता के युग की आकांक्षाओं के दर्शन कराता है और दूसरा हिंदी सिनेमा की वर्तमान स्थिति के सामने आईना रखने का काम करता है। जिसका सीधा सा सिद्धांत यही है कि दिल का हाल कहे दिलवाला सीधी सी बात न मिर्च मसाला। उनका सिनेमा मांसल यौवन से लथपथ होने के बावजूद कथानक और घटनाक्रम के रूप में पूर्ण रूप से सात्विक था। यही था उनका बिना मिर्च मसाले वाला सिनेमा।

पृथ्वीराज कपूर के बड़े बेटे के रूप में राज कपूर भारतीय फिल्म निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए अच्छी स्थिति में थे। क्योंकि, देश के सिनेमा को फिर से बनाने के लिए प्रेरणा का एक बड़ा हिस्सा भारतीय रंगमंच की दुनिया से आया था। पृथ्वीराज कपूर भारतीय जन रंगमंच संघ के सदस्य थे, जो 1942 में दर्शकों में अधिक राजनीतिक जागरूकता लाने के लिए रंगमंच का उपयोग करने के उद्देश्य से गठित एक वामपंथी संगठन था। इसके कई सदस्य फिल्मों में रुचि रखते थे, जिनमें केए अब्बास एक फिल्म समीक्षक जो सिनेमा के लिए लेखन और निर्देशन करने लगे और भविष्य के फिल्म निर्माता ऋत्विक घटक शामिल थे। इस समूह की रुचि रखने वाले सिनेमाई रुझानों में सोवियत मूक सिनेमा, विशेष रूप से पुडोवकिन, जर्मन अभिव्यक्तिवाद, इतालवी नव-यथार्थवाद और अमेरिकी सिनेमा के कुछ अधिक लोकप्रिय तत्व जैसे चैपलिन और कैपरा शामिल थे। राज कपूर की फ़िल्में भी कमोबेश इन्ही की कोख से निकला सिनेमा मौजूद था।

राज कपूर की आरम्भिक फिल्में लोकप्रिय संगीत और मेलोड्रामा के मिश्रण में गरीबी और जाति के बारे में जनजागरण लाने का प्रयास करती रही हैं। श्री 420 ,जागते रहो, बूट पालिश से लेकर आवारा और जिस देश में गंगा बहती है। इसके बेहतरीन उदाहरण है। जिनमें राजकपूर ने चार्ली चैपलिन का भारतीयकरण कर फिर भी दिल है हिन्दूस्तानी की तर्ज में सफलतापूर्वक पेश किया। इन सबके चलते राज कपूर एक करिश्माई कलाकार और निर्माता-निर्देशक बन गए जिन्होंने दुनियाभर में भारतीय फिल्मों का झंडा फहराने में कामयाबी पायी। उनकी बाद की फिल्मों की चकाचौंध ने उन्हें हिन्दी फिल्मों के ग्रेटेस्ट शौमेन का दर्जा दिया, जो आज भी उनके नाम पर अखंडित है।

मदभरे गीत संगीत और दिल को छूने वाली कहानियों के साथ अल्हड प्रेम प्रसंगों के चलते राज कपूर बेहद लोकप्रिय हो गए। इस दौरान भारतीय फिल्म इतिहास की सबसे बड़ी स्टार और सबसे प्रशंसित अभिनेत्रियों में से एक नरगिस के साथ उनकी अक्सर ऑन-स्क्रीन जोड़ी भी बनी। 1950 के दशक के मध्य में अपनी प्रसिद्धि के चरम पर आवारा और श्री 420 की रिलीज़ के बाद राज कपूर न केवल भारत में बल्कि पूरे दक्षिण एशिया, अरब दुनिया, ईरान, तुर्की, अफ्रीका और सोवियत संघ में भी एक मशहूर हस्ती थे। साथ ही, उन्होंने अभिव्यक्तिवादी छाया और गहरे फ़ोकस के अपने उपयोग से हिंदी सिनेमा की शैलीगत शब्दावली का विस्तार करने में मदद की। बाद के वर्षों में रंग में काम करते हुए वे उन लोगों में से थे जिन्होंने हिंदी फ़िल्मों में तेज़ी से लंबे, विस्तृत और शानदार गीत अनुक्रमों को शामिल करना शुरू किया।

1960 के दशक में कपूर का काम धीमा पड़ गया। क्योंकि, उन्होंने एक लोकप्रिय मनोरंजनकर्ता के प्यार और दिल टूटने के बारे में आत्मकथात्मक फिल्मों की त्रयी पर काम करना शुरू कर दिया था। इसका नतीजा तीन भागों में एक लंबी फिल्म थी मेरा नाम जोकर जिसे 1970 में रिलीज़ किया गया और जिसे निश्चित रूप से मिश्रित प्रतिक्रिया मिली। इस पराजय के बाद, कपूर का करियर उनकी अगली फिल्म बॉबी से संभला, जिसने उनके बेटे ऋषि को स्टार बना दिया। लेकिन, इसके बाद उनकी क्रिएटिविटी पर ब्रेक लग चुका था और बाद के दौर में उन्होंने केवल तीन और फिल्मों का निर्देशन किया। जिसमें उन पर कथानक के बजाए नारी सौंदर्य के दोहन का आरोप भी लगा।

उनकी सबसे बड़ी सफलता और खासियत थी उनके काम करने की स्टाइल। वह ऐसे काम कर देते थे जिसकी कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था। मसलन जिस देश में गंगा बहती की कहानी सुनने के बाद शंकर जयकिशन ने यह कहा था कि बेहतर होगा वह इसका संगीत किसी दूसरे संगीतकार को दे दे क्योंकि इसमें गानों की सिचुएशन ही नहीं है। इसी कथानक में राज कपूर ने सात दिनों के अन्दर ग्यारह गानों की सिचुएशन निकालकर सभी को अचंभित कर दिया था। कहा जाता है कि वह अपनी फिल्मों के संगीत को आमजनां से पास करवाकर फिल्मां में रखते थे। इसी तारतम्य में एक बात यह भी चर्चित है कि वह अपनी फिल्मों के गानों को पहले किन्नरों को बुला कर सुनाते थे और उनकी सहमति के बाद उसे फिल्म में जोड़ते थे। उनकी फिल्मों में आजादी के बाद के भारत के आम आदमी के सपने, गांव और शहर के बीच का संघर्ष और भावनात्मक कहानियां जीवंत हो उठती थीं। आवारा, श्री 420, संगम, और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्में आज भी सिनेमा प्रेमियों के दिलों में बसी हुई हैं।

‘घर का भेदी’, लंका चमकाए...!

प्रकाश पुरोहित

सलमान अख्तर बेबाक हैं, मुंहफट हैं और बोलने में कई बार ईमानदार भी लगते हैं। इसी झांसे में उनकी लिखी किताब ‘घर का भेदी’ खरीद ली। लगा था, कुछ तो ऐसा पता चलेगा, जो अब तक रहस्य है। और कुछ नहीं तो फिल्मी लेखक भाई जावेद अख्तर से किस बात पर अबोला चल रहा है, इस पर तबसरा हो ही जाएगा। जावेद तो फिर भी इधर-उधर से उठाने में उस्ताद हैं, लेकिन ये भाई साहब तो और भी छिपे रुस्तम निकले।

ये किताब कुल जमा अस्सी पन्ने की है हिंदी में और इतने ही पन्ने उर्दू के हैं, जो यकीनन अनुवाद ही होगा, क्योंकि जितने शब्द अंग्रेजी के हिंदी में आए हैं, लगभग उतने ही उर्दू में भी हैं। अंग्रेजी के लिखे और उनका मतलब भी बताया यानी एक बात के लिए दो लाइन हजम। किताब के इन अस्सी पन्नों में से कम से कम पांच-छह तो कोरे ही होंगे। ऐसा लगता है, जैसे किसी ने कोर्स की किताब नहीं पढ़ी हो और जेब में रखी चिट या कुंजी से मार कर जवाब लिख दिए हों। यह सरासर ठगी है।

अब बात करें कंटेंट की, तो अपने दादा हुजूर से शुरू होते हैं, मामू मजाज, पिता जां’निसार अख्तर से होते हुए जावेद तक चले आते हैं। मजाज लखनवी के बारे में कुछ नया नहीं है, क्योंकि उनके किस्से इतने बार लिखे और बताए जा चुके हैं कि लगता है पन्ने पलटते चलिए। घर में बच्चे बड़े नहीं हो रहे थे, इसलिए मजाज को मां और नानी का खूब साथ मिला और इस वजह से पिता से दूर होते गए। चूंकि सलमान अख्तर मनोविश्लेषक हैं और अमेरिका में रहते हैं तो विदेशी दार्शनिकों के नाम और काम का पता है, लेकिन इससे तो घर के भेद नहीं खुलते ना।

अगर ये ही घर का भेदी है तो हर कोई चाहेगा कि उसके घर में ऐसा कोई हो। यह घर का भेदी तो लंका बचाने निकला है और अदा यह है कि देखिए, कैसा विद्रोह। इसका शीर्षक ही ठग-विद्या का नमूना है। दादा मुज्तर खैराबादी को सलमान अख्तर ने तब पढ़ना शुरू किया, जब उम्र आधी से ज्यादा पार हो चुकी थी, जबकि उनका साहित्य उनके घर में ही था। लिखते हैं ‘जिंदगी की व्यस्तता और डॉक्टरी की प्रैक्टिस ने दिल-ओ-दिमाग को कैदी बना रखा था। हम इसका शिकार हो गए और खानदानी विरासत से बेगाने। जावेद के बारे में राय है ‘हिंदी फिल्मों के जाने-माने संवाद लेखक और गीतकार होने के अलावा खुद भी प्रसिद्ध शायर और हर सामाजिक परिभाषा के अनुसार ‘बड़े आदमी’ हैं। दादा खैराबादी का साहित्य ‘खिरमन’ नाम से पांच खंडों में है, लेकिन सलमान साहब ने उन्हें पांच पन्नों में ही निपटा दिया है। कहते भी हैं कि हवाई अड्डे पर फ्लाइट के इंतजार में ये पन्ने लिखे गए हैं, लगते भी हैं कि ये नोट्स हैं, किताब नहीं। लिखते हैं ‘आखिरकार हम दोनों भाई हैं और भले ही सतही तौर पर हमारी जिंदगी के रास्ते, मकसद और कामकाज के क्षेत्र अलग-अलग हैं, लेकिन कुछ जख्म हमारे एक से हैं और इसका असर हमारे चरित्र पर भी है। मेरी हर पल कोशिश रही कि जावेद के कलाम के मखमल में मनोविज्ञान के कुछ सलमा-सितारे टांक दूं।’ अब बताइए, ऐसे में आप कैसे उम्मीद करेंगे कि कोई घर का भेदी हो जाएगा। यह तो खानदानी विरुदावली-गान है।

जावेद ने तो फिर भी अपने पिता के खिलाफ बोला और लिखा है, लेकिन यहां सलमान ने उनकी शायरी की आड़ ले ली और अठारह पेज में ज्यादातर उनकी शायरी का जिक्र है और खुलासा है, जो कि हम पहले से जानते और पढ़ते रहे हैं। पिता के बगैर कैसे बचपन बीता और क्या-क्या दुःख मुसीबतें आईं, कहीं जिक्र नहीं है। यह किस्सा तो हजार बार छप चुका है कि बेगम अख्तर के पास जां’निसार अख्तर की कोई गजल नहीं थी तो उन्होंने वहीं बैठे-बैठे कई शेर वाली गजल लिख दी थी। और तो और, उनकी दो गजलें तो पूरी ही उतार दीं। अगर दुनिया की नजरों से महरूम होती तो फिर भी मान लेते... जो जगजाहिर है, उसमें क्या नयापन है!

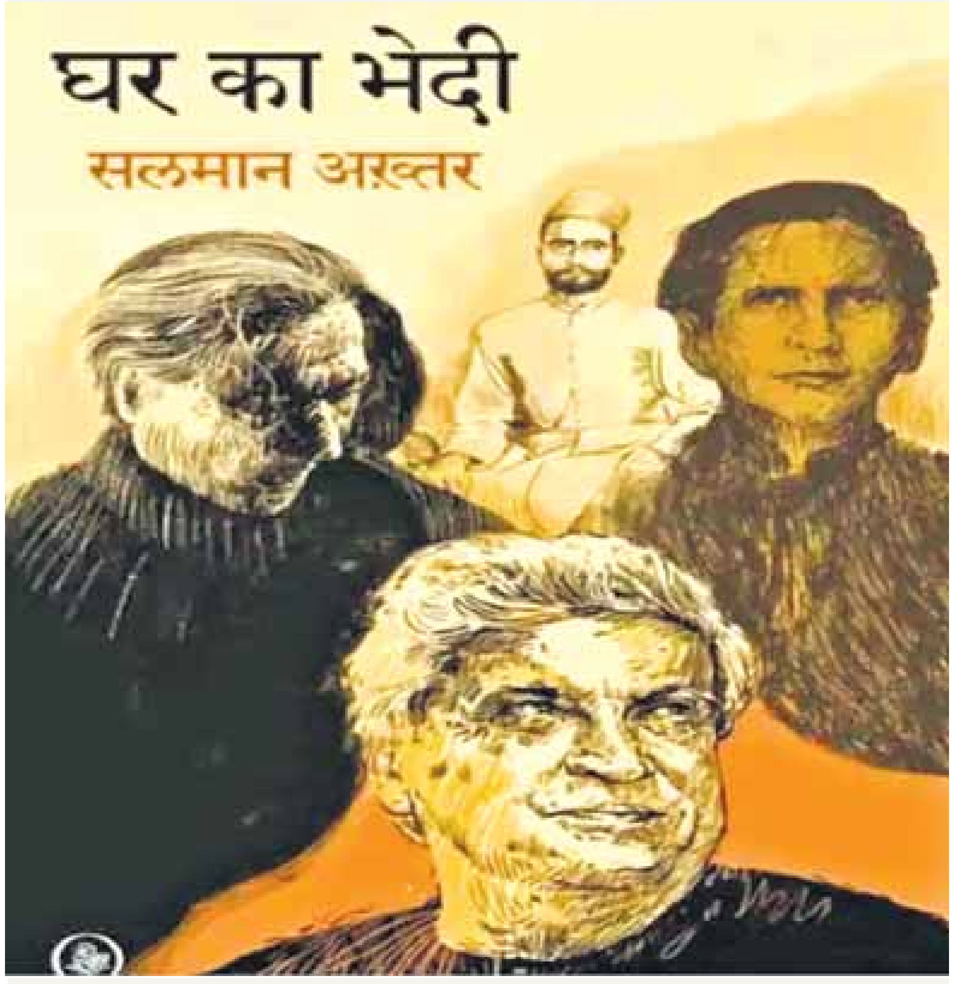

जावेद अख्तर पर बोल तो फिर भी लेते हैं दिल खोल के सलमान, लेकिन लिखने में खुद को साफ बचा ले गए कि उनके पांच शेर उठा लिए हैं और उनका उसी तरह से तबसरा किया है, जैसे स्कूल में बच्चे किसी कवि की कविता का भावार्थ बताते हैं। या तो सलमान यह बताना चाह रहे हैं कि जावेद के खाते में ये बस पांच ही शेर ढंग के हैं या यह कि कुछ लिखना तो है भाई, पर तो यूं ही सही। अब बताइए, जावेद के शेर भी अगर समझाए जाने लगें तो यह जुर्म ही तो है।

यह है अस्सी पेज की किताब। कह सकते हैं सबसे महंगी समझी जानी चाहिए और इसके नाम यह रिकॉर्ड भी दर्ज होना चाहिए। जैसे कद्दू और अंगूर की तरकारी में दोनों का अनुपात समान हो तो क्या कहेंगे आप, यही ना कि ठग लिया। यहां किताब छह सौ रुपए की है, यानी मोटा-मोटा गणित लगाएं तो एक पेज करीब सात रुपए का। सात नहीं, एक पंक्ति भी यदि दमदार है तो सात सौ रुपए भी कम हैं! गुलेरीजी की ‘उसने कहा था’ आज भी याद है तो वजह यही है कि बात में दम है। शब्दों की जादूगरी और शब्दों के खेल में फर्क है। यह किताब चौराहे पर तमाशे दिखाने वाले के जादू की तरह है कि ‘नरमुंड’ से आवाज निकलने का दावा किया जाता है... और अंत में ताकत की पुड़िया या तावीज बेच दिया जाता है!

राजकमल ने इसे छापा है तो यह खुलासा कहीं नहीं है कि आधी हिंदी और आधी उर्दू में है। यह तो चालबाजी है कि बड़े मियां ने उर्दू में लिखा और अनुवाद के साथ ओरिजनल भी छाप दिया। अब अंग्रेजी किताबों में भी यह होने लगे तो क्या गजब। हिंदी की किताब अंग्रेजी और हिंदी में साथ हाजिर और दाम कई गुना।

पेब्लिंग करते रहो, रिश्ते टिके रहेंगे

क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

आप कहेंगे महीने दो महीने में एक बार मैं रिश्तों पर ज़रूर बात करती हूँ। आप ही सोचिये ना जब आपके पास गाड़ी बंगला धन दौलत, ऐशो आराम सुविधा सब है फिर आप दुःखी क्यों रहते है क्योंकि आपके पास वक्त की कमी है और आपके पास अपने परिवार माता पिता, दोस्तों, बच्चों के साथ रिश्ता जोड़े रखने में समस्या हो रही है।

रिश्तों का जोड़ क्यों टूटा?

वक़्त का फेविकोल जो नहीं था...

इस वक़्त टीनएजर्स ने एक नया शब्द ढूंढा है (शुक्र है वे भी चाहते है रिश्तों से जुड़ना)। आपने अंग्रेजी का शब्द पेब्लस (कंकड़, पत्थर) जरूर सुना होगा। हम अक्सर अपने घर के बाहर पेब्लस लगा कर जोड़ कर फ्लोर बनाते हैं और बाहरी एरिया को सुंदर बनाते है तो अंदर के एरिया का क्या? अजी, वहां कीमती मार्बल्स लगते है। पर मेरे ख़्याल से छोटे छोटे पत्थरों से जुड़ाव की शुरूआत क्यों ना की जाए? टीनएजर्स अपने प्रिय लोगों, दोस्तों/माता पिता के बीच का इमोशनल बैरियर तोड़ कर उनसे जुड़ना चाहते है। इसे उन्होंने ‘‘पेब्लिंग‘‘ का नाम दिया है। ये एक खूबसूरत रोमांटिक रिश्ते को दिया नाम है जो माता पिता और बच्चों के बीच पुल का काम करता है।

इसके पीछे की एक छोटी पर बहुत खूबसूरत कहानी है। आप अंटार्कटिका में रहने वाले पेंगुइन के बारे में जानते ही होंगे। ये दुनिया का सबसे ईमानदार कपल है जो कभी बेवफ़ाई नहीं करता। एक नर एक ही मादा के साथ जिंदगी बिताता है। कोर्टशिप के दौरान नर पेंगुइन छोटे रॉक के टुकड़े मादा पेंगुइन को लाकर देता है जो इस बात का संकेत होता है हम अब मिलकर घोंसला बनायेंगे।

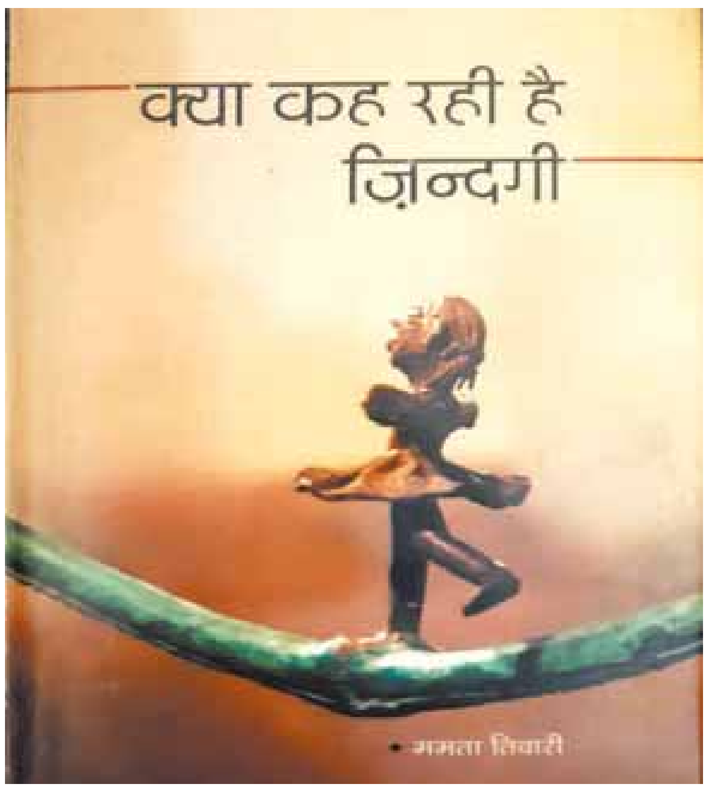

अब ये पेब्लिंग इंसानों में दूसरे रूप में आया। मेरी मनोवैज्ञानिक सलाहकार सहेली ने बताया कि रिश्तों में पेब्लिंग करते रहो, रिश्ते टिके रहेंगे। भला वो कैसे मैंने पूछा। उसका कहना था पत्थर के टुकड़ों से नहीं आपके पास वक़्त नहीं है पर मोबाइल खूब चलाते हैं जो आप से दूरी बढ़ा रहे है। उन्हें मुस्कुराने के इमोजी, या आई लव यू या कोई अपने हाथ से लिखी दो लाइनें भेजने की कोशिश करे। कृपया फारवर्डे मैसेज ना भेजें। वो बिना पढ़े कही और भेज देंगे। आप स्वयं कुछ लिखें जो उन्हें खुश कर दें। जैसे मैं और मेरे दोस्त दूरी के बाद भी जुड़े है हम फोन भी नहीं करते। अपने पाठकों और यूट्यूब के श्रोता के मैसेज के जवाब नहीं दे पाती पर रोज़ पूछती हूँ, ‘‘और क्या कह रही है जिंदगी’’ ये मेरा अपना लिखा वाक्य है सो फारवर्ड भी करती रहती हूँ। इससे लगता है हम ‘‘टच÷ में है। फिर बाद में पापा पेंगुइन, बेबी पेंगुइन को छोटे पत्थर लाकर देता है। यूँ प्यार का सिलसिला चलता रहता ही। जब वे कर सकते हैं तो हम इंसा क्यों नहीं? मैं सुबह ‘‘गुडमार्निंग की जगह दो लाइन ‘‘सुबह सलामत‘‘ की कहती हूँ। कई बार सोचती हूँ रोज़ भेजती हूँ लोग क्या सोंचेंगे, पर जिस दिन नहीं भेजती तो लोग पूछते है आज आपका सुबह सलामत नहीं आया। आप भी अपना कोई सिग्नेचर स्टाइल बना लें, प्यार व्यक्त करने का या रिश्ते जोड़ने का। अपनी दोस्त की पसंदीदा डिश बना कर भेज दे। पति को ऑफिस की व्यस्तता या मीटिंग में मिलेगा कि ‘‘यू आर अमेजिंग÷ वो ना मुस्कुराये तो कहियेगा। आप सबके पास ढेर सारे मीम्स, भावुक लाइनें, वीडियो, सिंगर है तो गुडमॉर्निंग की दो लाइने या कोई इन्स्ट्रुमेंट की धुन भेज दे। क्लासिक सिंगर है तो दो लाइन भजन की भेजें।

अजी बहुत तरीके हैं जुड़े रहने के। ये सबसे अच्छा सकारात्मक तरीका है रिश्ते जोड़ने का। ऐसे हमारे रिश्ते मजबूत बनते हैं। जहाँ कठिनाई हो वहाँ प्रयास करते रहें और मेरा तरीका अपना कर पूछते रहें सबसे और क्या कह रही है जिंदगी?

मुद्दा

असंगठित मजदूरों में कैसा मातृत्व अवकाश?

मैं अगस्त 2024 को परनाना बन गया। मेरी नातिन ने बिटिया को जन्म दिया। वह पिछले 15 दिनों से सुवासरा आई है। उसके आने से हमारे घर में चहल-पहल है। वह निजी कंपनी में कार्यरत हैं और दिसंबर 2024 तक मातृत्व अवकाश पर हैं। जनवरी 2025 में उसे ड्यूटी ज्वाइन करनी है। रोजाना ही इस बात पर विर्मश जारी है कि दोनों पति-पत्नी कार्यरत हैं इसलिए बच्ची की देखभाल के लिए उसके साथ परिवार की विश्वस्त महिला सदस्य होना जरुरी है।

इन्हीं चिंताओं के बीच मेरा ध्यान हमारे घर के बाहर बन रही सड़क तथा वहां काम कर रहे श्रमिकों की ओर गया। पिछले कई महीनों से चल रहा है जिनमें कुशल और अकुशल दोनों तरह के मजदूर कार्यरत हैं। मैं कैमरा कंधे पर लटकाए विषय की तलाश में एक दो चक्कर मार लेता हूं। मैंने देखा एक मजदूर अपने दो बच्चों के साथ गुजर रहा था। मुझे विषय प्रभावी लगा मैं पीछे-पीछे चल रहा पड़ा। उस मजदूर ने खंदक में काम कर रही महिला मजदूर यानी बच्चे की मां को दूधमुंहा बच्चा सौंप दिया। महिला ने खंदक में ही कपड़ा बिछाकर बच्चे को दूध पिलाना शुरू कर दिया।

मुझे यकायक अपनी चिंताएं याद आ गईं। संगठित सेवा क्षेत्र में मातृत्व अवकाश तथा अन्य कई सुविधाओं हैं उसके बाद भी हम मेरी नातिन और उसकी बेटी को लेकर चिंतातुर हैं। जबकि मजदूर स्त्री को छोटे बच्चे को दूर रख कर मजदूरी करनी ही है। असंगठित मजदूरों में कैसा मातृत्व अवकाश? उन्हें किसी तरह का कोई अवकाश या सुविधा नहीं है। वे बच्चों को कार्यस्थल पर भगवान भरोसे छोड़कर दो रोटी की जुगाड़ में जुटती हैं। हमें इस दिशा में सोचना चाहिए।

फोटो और विवरणः बंसीलाल परमार

जुगलबंदी

समीर लाल ‘समीर’

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

बहुत निकले मिरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले

तिवारी जी ने कभी जीवन भर नौकरी नहीं की किन्तु नौकरी करने में क्या समस्या आती है, बॉस कैसे परेशान करते हैं, उनसे निपटने के लिए क्या हथकंडे अपनाना चाहिए आदि पर वह नियमित ही अपना ज्ञान पान के ठेले पर बैठे देते रहते थे। वैसे नौकरी तो घंसु ने भी कभी नहीं की लेकिन हाँ में हाँ मिलाने में सबसे आगे वही रहता कि तिवारी बिल्कुल सही कह रहे हैं। नौकरी न करने के मामले तिवारी जी और घंसु में मात्र इतना अंतर था कि तिवारी जी ने कभी खोजी ही नहीं और घंसु को कभी मिली नहीं। घंसु थे तो आठवीं पास लेकिन उसने इस कमी को अपनी महत्वाकांक्षाओं के आड़े नहीं आने दिया वो लगातार मैनेजर पद की नौकरी तलाशता रहा और मैनेजर पद की नौकरियां उससे मुंह चुराती रहीं।

तिवारी जी का जिंदगी के प्रति नजरिया एकदम साफ था। उनका शुरू से मानना रहा की अगर जीवन में आप अपना उद्देश्य जानते हैं तो सफलता जरूर हाथ लगेगी। तिवारी जी का उद्देश्य एकदम स्पष्ट था। जब तक पिता जी की नौकरी और फिर पेंशन आएगी तब तक तो उनके भरोसे चल लेंगे और जल्दी शादी करके पिता जी के गुजरने के पहले अपने बच्चों को इतना बड़ा कर लेंगे ताकी वो कमाने लगें तो बाकी की जिंदगी उनके भरोसे चल जाएगी।

इधर तिवारी जी अपना उद्देश्य साध रहे थे, उधर गालिब बैठे इनकी किस्मत लिख रहे थे-

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मिरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।

तो हुआ यूं कि तयशुदा हिसाब से जीवन की गाड़ी चल रही थी। माता जी जल्द ही स्वर्ग सिधार गईं। तिवारी जी बारहवीं पास कर घर बैठ गए थे। पिता जी ने पड़ोस के गाँव में शादी तय कर दी। किन्तु शादी के ठीक दो माह पूर्व पिता जी भी स्वर्ग सिधार गए। किराये का मकान था, आय का कोई स्त्रोत था नहीं अतः विकल्पों के आभाव में तिवारी जी ने तय तारीख पर शादी कर ली और फिर ससुराल में ही रह गए। वैसे भी कहाँ जाते और क्या खाते?

ससुर साहब की एक ही बेटी है। सरकारी बाबू के पद से रिटायर हुए हैं तो पेंशन आती है और पुश्तैनी दो मंजिला मकान है। ऊपर परिवार रहता है और नीचे दो दुकानें किराये पर दे रखी हैं। बहुत नहीं तो भी ठीक ठाक तो घर चल ही जाता है। तिवारी जी पूर्व में तय योजना के अनुसार जल्द ही बच्चे कर लेना चाहते थे ताकि जब वो कमाने लगें तो थोड़ा इंडिपेंडेंट हो लें। बहुत निकले मिरे अरमान की तर्ज पर तिवारी जी प्रयासरत रहे लेकिन बच्चे हुए ही नहीं। उद्देश्यों ने आधार खो दिया और तिवारी जी पूर्णरूप से ससुराल आधारित ही हो गए।

अब उनकी एक नियमित दिनचर्या भी हो गई। सुबह चौक पर दुकाने खुलते ही तिवारी जी पान के ठेले की बैंच पर आ बैठते और वहाँ मौजूद अन्य खाली लोगों पर ज्ञान वर्षा करते रहते। इसी सत्संग का वरदान रहा कि घँसु जैसा चेला मिल गया। एक बार दोपहर में खाना खाने और फिर रात को दुकानें बंद हो जाने पर ही घर जाते। कभी नागा नहीं- अनुशासन के एकदम पक्के।

इस बीच कब ससुर जी गुजर गए, कब किराये के असल हकदार तिवारी जी हो गए। पति पत्नी दो लोग - घर खर्च के बाद भी कुछ रुपया बच ही जाता अतः जैसा की अधिक रुपयों के साथ होता है कि कुछ शौक जन्म ले बैठे। अब अक्सर रात में दुकाने बंद होने के बाद घंसु के साथ दो दो पैग लगा लेते तब घर आते। पीने की आदत ने एकाएक ज्ञान बांटने की प्रतिभा में चार चाँद लगा दिए।

कल आप पेंशन पर ज्ञान दे रहे थे और सरकार को उनके वाहियात नियमों के लताड़ रहे थे। उनके मित्र नेमा जी के साथ वो पेंशन कार्यालय गए थे, जहाँ प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी नेमा जी अपने जीवित होने का प्रमाण पत्र जमा करा है थे। बड़े बाबू ने फाईल देखकर बताया कि आपकी फाईल पर पिछले वर्ष का जीवित होने प्रमाण पत्र नहीं है। या तो उसको जमा कराएं अन्यथा पिछले वर्ष की पेंशन मय ब्याज और पेनाल्टी के वापस ले ली जाएगी।

तिवारी जी मदद हेतु आगे बढ़े और उन्होंने बाबू को समझाया कि जब नेमा जी आज जिंदा होने का प्रमाण पत्र दे रहे हैं तो पिछले बरस भी तो जिंदा रहे ही होंगे। बाबू बस एक राग पकड़े बैठा रहा कि हम कैसे मान लें, कोई कागज तो है ही नहीं। काफी बहस के बाद यह तय पाया गया कि बैंक चलकर पुनः पिछले बरस का प्रमाण पत्र बनवा लेते हैं।

बैंक पहुंचे तो वहाँ भी वही सवाल कि हम कैसे मान लें कि आप पिछले बरस भी जिंदा थे? नेमा जी के लिए यह प्रमाणित करना असंभव सा होता जा रहा था कि वह पिछले बरस भी जिंदा थे। इस साल का तो पक्का है कि जिंदा हैं, प्रमाण पत्र लेमिनेट करा लिया है। कई परम्पराएं भले ही समाज के लिए भली न हों तो भी कभी कभी, जब आपका काम अटकता है तो जीवनदायनी सी बन कर आपको भवसागर पार करवा ही देती हैं। रिश्वतखोरी उन्हीं परंपराओं की पहली पायदान पर सदा से विराजती रही है।

किसी तरह ले देकर तिवारी जी को पिछले बरस फिर से जिंदा किया गया, प्रमाण पत्र जारी हुआ। पेंशन की फाईल में नत्थी हुआ और तब जाकर जिंदगी में कॉन्टिन्यूटी आई वरना नेमा जी जीवन बीच में एक साल बिना जिंदा रहे ही गुजरता जाता।